बच्चे की भाषा और अध्यापक

एक निर्देशिका

कृष्ण कुमार



भूमिका

इस किताब में दी गई गतिविधियां 1985 की गर्मियों में टीकमगढ़ (मध्य प्रदेश) के बाल साहित्य केन्द्र में आजमाई गईं। सबसे ज्यादा मैं उन बच्चों का आभारी हूँ जो रोज़ सुबह साढ़े छः बजे केन्द्र में आकर इन गतिविधियों में भाग लेते थे और जिन्होंने भाषा की शिक्षा के व्यावहारिक पहलुओं और परिप्रेक्ष्य को समझने में मेरी मदद की। यह किताब उन्हीं बच्चों को समर्पित है। मैं बाल साहित्य केन्द्र के गुरबचन सिंह और फूल चन्द्र जैन का भी आभारी हूँ जिन्होंने इन गतिविधियों के आयोजन में मेरी सहायता की। पुस्तक पूरी हो जाने के बाद उसकी पांडुलिपि बेहद ध्यानपूर्वक पढ़ कर कई बहुमूल्य सुझाव देने के लिए फूलचन्द्र जैन का मैं विशेष आभारी हूँ।

भाषा के क्षेत्र में इस शताब्दी के अनेक शिक्षा वैज्ञानिकों का मैं कितना ऋणी हूँ यह तो जाहिर ही है। मैंने किसी को सीधे-सीधे उद्धृत सिर्फ इसीलिए नहीं किया है जिससे कि यह किताब पांडित्यपूर्ण न दिखे और लोग इसे व्यवहार में लाने में संकोच न करें। जोन टफ, सिल्विया एश्टन-वार्नर और जेम्स ब्रिटेन से मैंने तमाम चीज़ें ली हैं। फ्रैंक स्मिथ, प्याजे, वायगोट्स्की, चुकोव्स्की, गिजुभाई और रवीन्द्रनाथ टैगोर को पढ़ कर जो बाते मैंने सीखीं, उनका भी मैंने इत्मीनान से प्रयोग किया है। गिजुभाई और टैगोर ने मुझे यह भरोसा बनाए रखने के लिए प्रोत्साहित किया कि भारत की परिस्थितियों में भी बाल-केन्द्रित शिक्षण सम्भव है।

इस विश्वास को फैलाने के लिए ही मैंने यह किताब लिखी है। इसे लिखने का अवसर देने के लिए मैं युनिसेफ को धन्यवाद देता हूं। यह पुस्तक नर्सरी और प्राइमरी स्कूलों के बच्चों के अध्यापकों, इन अध्यापकों के प्रशिक्षकों, निरीक्षकों, और पाठयक्रम बनाने वालों के लिए है। मुझे आशा है कि यह पुस्तक हमारी व्यवस्था को नरम बनाने में एक छोटा-सा योगदान सिद्ध होगी और इस प्रकार एक दिन बच्चे प्राइमरी स्कूल को एक ऐसी अच्छी, आनन्ददायक जगह के रूप में देख सकेंगे जहां रुकने की इच्छा होती हो।

कृष्ण कुमार

अध्याय-1

भाषा माने क्या?

हममें से कई लोग भाषा को सम्प्रेषण का साधन मानने के इतने ज्यादा आदी हो चुके हैं कि हम सोचने, महसूस करने और चीजों से जुड़ने के साधन के रूप में भाषा की उपयोगिता को अक्सर भूल जाते हैं। भाषा के उपयोग का यह बड़ा दायरा उन लोगों के लिए बेहद महत्वपूर्ण है जो छोटे बच्चों के साथ काम करना चाहते हैं। शिशु के व्यक्तित्व और उसकी क्षमताओं के विकास को आकार देने में भाषा एक विशेष भूमिका निभाती है। एक सूक्ष्म किन्तु मजबूत ताकत की तरह भाषा संसार के प्रत्येक बच्चे के दृष्टिकोण, उसकी रुचियों, क्षमताओं, यहां तक कि मूल्यों और मनोवृत्तियों को भी आकार देती है। यह सब कैसे होता है– इस पुस्तक– विशेषतः इस अध्याय– का यही विषय है।

लेकिन पहले हमें एक ऐसी बात साफ कर लेनी चाहिए जिस पर अक्सर काफी विवाद छिड़ा रहता है। स्कूली अध्यापक भाषा के नाम पर 'हिन्दी' और 'अंग्रेजी' या अन्य किसी भाषा को एक स्कूली विषय की तरह लेने के आदी हैं। इसलिए वे सोचेंगे कि यह पुस्तक किसी ख़ास भाषा की पढ़ाई के बारे में होगी। दूसरी तरफ विशेषज्ञ हैं जो बच्चे की 'पहली भाषा' और 'दूसरी भाषा' इत्यादि में गहरे भेद करने के आदी हैं। अध्यापक और विशेषज्ञ दोनों सोचते हैं कि भाषा की शिक्षा पर किसी किताब की शुरुआत एक ख़ास भाषा के नियमों, उसकी आम संरचनाओं, शब्दावली इत्यादि के विवरण से होनी चाहिए।

यह सब इस किताब में नहीं है। यह पुस्तक किसी एक ख़ास भाषा के अध्यापन की निर्देशिका कतई नहीं है। यह पुस्तक उन जरूरतों के बारे में है जिन्हें कोई भी भाषा बच्चों के जीवन में पूरा करती है। दुनिया का हर बच्चा–चाहे उसकी मातृभाषा कोई भी हो–भाषा का इस्तेमाल तुरंत कुछ उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए करता है। एक बड़ा उद्देश्य है दुनिया को समझाना, और इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए भाषा एक बढ़िया औजार का काम देती है। जब तक हम बच्चे की निगाह से देखने और बच्चे की जिन्दगी में भाषा की भूमिका को समझने में असमर्थ रहते हैं, तब तक हम अध्यापक, माता-पिता या देखरेख करने वालों के रूप में अपनी भूमिका ठीक से तय नहीं कर सकते।

भाषा और करना

बच्चों की भाषा का सम्बन्ध उन अनुभवों से है जिन्हें वे अपने हाथों और शरीर से स्वयं करते हैं और उन वस्तुओं से भी है जिनके सम्पर्क में वे आते हैं। बचपन में शब्द और क्रियाकलाप साथ-साथ चलते हैं। क्रियाकलाप और अनुभवों को आत्मसात करने और व्यक्त करने के लिए शब्दों की जरूरत होती है। कोई अनुभव जब पूरा हो चुकता है, उसके बाद भी वह शब्दों के जरिए उपलब्ध रहता है। बच्चे जिन चीजों के सम्पर्क में आते हैं उनसे और घनिष्ठ सम्बन्ध बनाने के लिए वे शब्दों की मदद लेते हैं। दूसरी तरफ, ऐसे शब्द, जो बच्चों के सक्रिय अनुभवों और वस्तुओं से जुड़े नहीं होते, उनके लिए ख़ाली और बेजान रहते हैं।

'बिल्ली', 'दौड़ना', 'गिरना', 'नीला', 'नदी' और 'खुरदरा' जैसे शब्द यदि पहले-पहल किसी क्रियाकलाप या अनुभव के सन्दर्भ में नहीं आएं तो उनका अर्थ बच्चे के लिए बहुत सतही रहेगा। केवल एक सक्रिय अनुभव के बाद ये शब्द एक बिम्ब से जुड़ते हैं और भविष्य में सार्थक इस्तेमाल के लिए उपलब्ध होते हैं।

बच्चे के शारीरिक अनुभवों और शब्दों के बीच यह सम्बन्ध बड़ों, विशेषतः अध्यापकों पर एक निराली जिम्मेदारी डालता है। एक अध्यापक के रूप में आप शायद यह उम्मीद करते होंगे कि माता-पिता ने अपने बच्चों को तरह-तरह के अनुभव पहले ही करा दिए होंगे। पर यह बात अधिकांश माता-पिता पर लागू करना मुश्किल है। ज्यादातर माता-पिता में या तो इतना विश्वास नहीं होता कि वे छोटे बच्चों को कई तरह की चीजों के सम्पर्क में लाएं, या फिर उनके पास इतना वक्त नहीं होता कि अपनी दिनचर्या में चीज़ों को देखने और करने की बच्चों की धीमी रफ्तार को जगह दे सकें। बड़े अक्सर काफी परेशान हो जाते हैं अगर बच्चा नल में पानी की धारा से आधे घंटे खेलता रहे या सारे बर्तनों को फर्श पर बिखेर दे या छाते को सैंकड़ों बार खोले और बन्द करे। कभी-कभी चीजों को या फिर बच्चे को नुकसान या चोट से बचाने की खातिर बड़े कुछ इने-गिने अनुभवों को छोड़ कर बाकी पर पाबन्दी लगा देते हैं।

माता-पिता ने जो भी किया हो या न किया हो, अध्यापक की जिम्मेदारी स्पष्ट है। उसे ऐसा वातावरण पैदा करना है जिसमें बच्चे भाषा को लगातार जीवन के अनुभवों और चीजों से जोड़ सकें। ऐसा करने के लिए ये बातें मददगार होंगीः

* बच्चे स्कूल में कई तरह की वस्तुएं (जैसे पत्तियां, पत्थर, पंख, तिनके, टूटी-फूटी चीजें) लाएं और उनके बारे में बात करें, पढ़ें, लिखें;
* बच्चों से उन अनुभवों के बारे में कहने, लिखने और पढ़ने को कहा जाए जो उन्हें स्कूल के बाहर हुए हैं;
* बच्चों को कक्षा से बाहर ले जाया जाए जिससे वे स्कूल के गिर्द फैली दुनिया की तमाम छोटी-मोटी चीजें (जैसे टूटी हुई पुलिया, कीचड़ से भरा गड्ढा, मरा हुआ कीड़ा, घोंसले में अंडे) बारीकी से देख सकें और उनकी चर्चा कर सकें। स्कूल के पड़ोस की ऐसी शोध-यात्राएं भाषा सीखने के लिए मूल्यवान सामग्री दे सकती हैं, जैसा कि यह पुस्तक बताएगी।

ऐसे स्कूल में, जहां बच्चे अपने हाथों से तरह-तरह के काम नहीं कर पाते, जहां वे अधिकांशतः बैठे और अध्यापक की बातें सुनते रहते हैं, और जहां छूने, उलटने-पुलटने, तोड़ने और ठीक करने के लिए चीजें नहीं होतीं, भाषा के कौशलों का विकास अच्छी तरह नहीं हो सकता।

भाषा क्या-क्या काम करती है?

जिन लोगों ने बच्चों की भाषा का अध्ययन किया है, उनके अनुसार बच्चे बातचीत की बुनियादी क्षमता हासिल करते ही भाषा का प्रयोग नाना किस्म के उद्देश्यों के लिए करना शुरू कर देते हैं। इनमें से कुछ उद्देश्य इस प्रकार हैंः

1 अपने काम का संचालन

बच्चे कुछ करने के साथ-साथ उसके बारे में बात करते जाते हैं। यह बात अपनी गतिविधि पर एक तरह की निजी टीका होती है। सम्भवतः यह टीका उन्हें अपन गतिविधि कुछ और देर तक जारी रखने में मदद

देती है और उनकी दिलचस्पी बनाए रखती है। इससे फर्क नहीं पड़ता कि टीका कोई सुन रहा है या नहीं। सम्भव है गीली रेत में सुरंग या किले बनाते हुए छोटे बच्चों के दल में हर बच्चा अपनी टीका अलग चालू रखे। हो सकता है, यह टीका दूसरे को सिर्फ़ कुछ बुदबुदाहट की तरह सुनाई दे।

तीन से आठ साल के बच्चे को उस वक्त गौर से देखिए जब वह अकेले कुछ कर रहा हो या खेल रहा हो। वह जो कहे, ध्यान से सुनिए। इसी तरह कई और बच्चों को, जिनमें लड़के-लड़कियां दोनों हों और अलग-अलग उम्र के हों, देखिए।

क्या आपने उनकी एकांत 'बात' में कोई व्यक्तिगत फ़र्कपाया? क्या यह 'बात' बच्चों को एक काम में रुचिपूर्वक लगे रहने में मदद देती है? क्यों?

2 दूसरों के क्रियाकलाप और ध्यान का संचालन

भाषा के इस उपयोग से माता-पिता और अध्यापक के रूप में हम अच्छी तरह परिचित हैं क्योंकि हमारा बहुत-सा समय बच्चों की मांगों को पूरा करने में लगता है। अक्सर हम शारीरिक किस्म की मांगों के प्रति सचेत रहते हैं, पर दूसरी तरह की मांगें– जिनमें बौद्धिक और भावनात्मक मांगें शामिल हैं– भी महत्वपूर्ण हैं। बच्चे अजीब या आकर्षक चीजों की ओर ध्यान खींचने के लिए भाषा का इस्तेमाल करते हैं। उन्हें यह अपेक्षा रहती है कि जिस चीज ने उनका ध्यान खींचा है.वह उनकी बात सुनने वाले का ध्यान भी खींचेगी।

यदि आप बच्चों की एक टोली को गौर से देखें तो पाएंगे कि वे एक-दूसरे का ध्यान अक्सर किसी ऐसी चीज या किसी चीज की ऐसी विशेषता की चर्चा करके खींचते हैं जिसे, वे सोचते हैं, दूसरा देख न पाया होगा। दूसरों से अपेक्षा प्रकट करना ही भाषा के इस उपयोग की विशेषता है: अपेक्षा यह कि 'जो मैंने देखा उसे दूसरे भी देखना चाहेंगे'। यह अपेक्षा मानवीय सम्बन्धों और साथ-साथ रहने के आनन्द को लेकर एक गहरी मान्यता पर टिकी है। यदि वह व्यक्ति, जिसका ध्यान खींचा जा रहा है, इस अपेक्षा को पूरा नहीं करता है तो भाषा के विकास की बुनियाद को चोट पहुंचती है।

3 खेलना

अधिकांश बच्चों के लिए शब्द ढाई साल की उम्र से खेल और आनन्द का एक प्रमुख साधन बन जाते हैं। अलग-अलग स्वर में दुहरा कर, खींचतान कर और विचित्र संधियों में जोड़ कर बच्चे शब्दों से खेलते हैं और खुश होते हैं:

'दूध-जलेबी जग्गग्गा
पर इसमें है मग्गग्गा!'

'मैं चम्मच में बाल्टी रखूंगा।
उससे कुएं का दूध निकालूंगा!'

अनुपयुक्त जगह पर शब्द का प्रयोग करना उन्हें भाता है। उन्हें ऐसी कविताएं जल्दी से याद हो जाती हैं जिनमें इसी तरह शब्दों की खींचतान की गई हो। आशय यह है कि छोटे बच्चे शब्दों को खिलौनों की तरह इस्तेमाल करते हैं। शब्दों से खेलना बच्चों की रचनाशक्ति और ऊर्जा को बाहर लाने में अद्भुत भूमिका निभा सकता है।

घर के अन्दर या गली में अकेले या टोली बना कर खेलते– रस्सी कूदते, दौड़ते, उछलते, गेंद से टप्पा मारते हुए– बच्चे जो पंक्तियां दुहराते हैं सुनिए। अपने इलाके में बच्चों के पारम्परिक खेलगीत इकट्ठे कीजिए। यदि आपने मेहनत से काम किया तो सम्भव है कि आप आधुनिक 'मीडिया' और भाषा की रूढ़िग्रस्त शिक्षा के हमले से बच रहे खेलगीतों का एक छोटा-मोटा संग्रह बना सकें।

आपको जो खेलगीत मिलें, उन्हें तरतीब से लिख लीजिए। एक ही गीत के विविध रूपों को ढूंढिए और दर्ज कर लीजिए। आपको जहां व्याकरण की गलती और शब्दावली की खींचताना नज़र आती हो, वहां सुधार कतई न कीजिए।

बच्चों के खेलगीत भाषा के बेहद रचनात्मक और ताकतवर इस्तेमाल के निराले स्रोत हैं और ये भाषा के कई बुनियादी कौशल (जैसे पढ़ना) सिखाने के बहुत उपयोगी साधन हैं। उन्हें इस्तेमाल करने के कुछ सुझाव अगले अध्याय में दिए गए हैं।

बच्चों के कुछ पारम्परिक खेलगीतों के नमूने हैं:

'मरे को तुमने क्यों मारा
क्या लेता था नाम तुम्हारा?
तबला बजाने दो
आता है तो आने दो
तबला में टौंका
बिजन डडौंका।'

'अक्कड़ बक्कड़ बम्बे बो
अस्सी नब्बे पूरे सौ
सौ में लागा धागा
चोर निकल के भागा।'

4 समझाना

बच्चों की बात का उद्देश्य कई बार यह स्पष्ट करना होता है कि कोई चीज़ **कैसे** हुई। उदाहरण के तौर पर यदि आप एक बच्चे से पूछें कि बारिश कैसे हुई तो शायद वह आपको बताएगा कि पहले आसमान काले बादलों से घिर गया, फिर छोटी-छोटी बूंदें टपकने लगीं, फिर बारिश हुई जो बाद में इतनी तेज हो गई कि कोई चीज दिखाई तक न दे। घटनाक्रम बता कर बच्चा यह समझाता है कि एक बड़ी घटना कैसे घटी।

भाषा के इसी प्रयोग से कहानियां जन्म लेती हैं। इस दृष्टि से कहानियां चीज़ों की व्याख्या करने का साधन होती हैं। जाहिर है कि सब कहानियां चीज़ों की विश्वसनीय या वैज्ञानिक व्याख्या नहीं करतीं। वे जीवन की व्याख्या करने की हमारी इच्छा की प्रतीक होती हैं। जिस तरह बड़े, दुनिया की घटनाओं या राजनीति की व्याख्या करने को उत्सुक रहते हैं, उसी तरह छोटे बच्चे भी ज़िन्दगी की घटनाओं की व्याख्या करना चाहते हैं।

कोई चीज़ क्यों शुरु हुई? यह समझाने वाली कहानियां इकट्ठी कीजिए। इस तरह की कई कहानियां आपको स्थानीय लोक कथाओं में मिलेंगी। बारिश क्यों होती है या आदमी ने आग कैसे ढूंढी– ऐसी एक कहानी पृष्ठ पांच पर दी गई है जो समझाती है कि हाथियों ने उड़ने की क्षमता कैसे गंवाई। इन कहानियों को भाषा के अध्यापन में काम में लाने के कुछ तरीके 'बात' और 'पढ़ना' शीर्षक अध्यायों में देखिए।

आसमान में हाथी

बहुत पहले एक ज़माने में भारत के हाथी उड़ लेते थे। आज की तरह हाथी तब भी बहुत बड़े होते थे। उनका रंग बादलों की तरह सलेटी था। बादल आखिर उनके भाई ही तो थे। बादलों की तरह हाथी भी आसमान में जहां चाहे उड़ सकते थे। बस उन्हें अपने कान फटफटाने की देर थी।

बादलों की ही तरह वे अपना आकार भी बदल सकते थे। वे जो चाहे बन जाते थे— कभी एक राक्षस तो कभी छोटी-सी-बिल्ली। वे कभी किले की तरह दिखते तो कभी पहाड़ की तरह और कभी दौड़ते हुए एक कुत्ते की तरह।

गर्मियों के मौसम में एक दिन मोती की तरह चमकते हुए सलेटी हाथी धूप में उड़ रहे थे। वे एक गांव के ऊपर से गुज़रे जहाँ छोटे-छोटे बच्चे खेल रहे थे, एक खेत से गुज़रे जहां किसान जुताई कर रहा था, एक नदी पर से गुज़रे जहां लड़के भैंसों को नहला रहे थे। वे बातूनी बंदरों से भरे एक जंगल के ऊपर से भी गुज़रे।

लेकिन आकाश में बहुत ऊपर बड़ी गर्म हवा की एक लहर बह रही थी। हाथियों को देख कर वह उनके पीछे हो ली और सीधे उनकी सूंड में घुस गई। हवा क्या थी, काली मिर्च थी। हाथी लगे छींकने। छींकते-छींकते परेशान होकर उन्होंने सोचा कि कोई छायादार ठंडी जगह ढूंढ कर थोड़ी देर सुस्ता लें। उनके ठीक नीचे आम के बड़े-बड़े पेड़ थे। उनके नीचे ठंडक थी, छाया भी थी और आमों की बढ़िया खुशबू भी। गर्म हवा से बचने के लिए हाथी आहिस्ता से आम के सबसे बड़े पेड़ पर जा उतरे।

संयोग की बात थी कि उसी पेड़ के नीचे एक मास्टर जी और उनके छात्र बैठे हुए थे। स्कूल के अन्दर उस दिन बहुत ज्यादा गर्मी थी। मास्टरजी थके हुए थे और बच्चे थे एकदम बेचैन। वे अपनी पैंसिलें तोड़ते, सारे सवाल गलत करते, फिर खुसफुसाते, हंसते और नन्हें चूहों की तरह कुलबुलाते। वे एक क्षण को आराम से नहीं बैठ पा रहे थे।

मास्टरजी परेशान हो गए। पैर ज़मीन पर ठोक कर उन्होंने अपना डंडा हवा में घुमाया और बच्चों पर बरस पड़े। तभी अचानक उन्हें ख्याल आया — 'अगर ये बच्चे नहीं संभलते हैं तो मैं एक जादूमंत्र बोल कर इन सबको खरगोश बना दूँगा!'

उन्होंने सबसे शरारती बच्चे को पकड़ने के लिए अपनी बांह बढ़ाई। उसी समय हाथी आसमान से नीचे उतरे और अध्यापक के ठीक ऊपर वाली डाल पर आ बैठे।

अर्र... र... र... र... कर्र... र... र... धड़ाम!

डाल टूट कर मास्टर जी पर आ गिरी। मास्टर जी भी गिर पड़े, पर हाथियों ने इसकी कोई परवाह नहीं की। वे चुपचाप अपने कान फटफटा कर अगले पेड़ की तरफ चल दिए।

उन्हें उड़ कर जाता देख अध्यापक उठ खड़े हुए और हाथियों पर चिल्लाए — 'बुरे हाथियों! मैं तुम्हें मज़ा चखाता हूँ। मुझे गिराने की हिम्मत! मैं तुम्हें अभी बताता हूँ'। अध्यापक ने अपना डंडा घुमाया और एक जादूमंत्र बोला।

धीमे से सारे हाथी ज़मीन पर उतर गए। वे उड़ना भूल गए। और उस दिन से हाथी ज़मीन पर चलते हैं। जब वे आसमान में बादलों को उड़ता देखते हैं, उन्हें वह ज़माना याद आता है, जब वे खुब उड़ लेते थे, जैसे चाहे दिखने लगते थे, जहां चाहे चले जाते थे।

भारत की एक पौराणिक कहानी। प्रस्तुति—फ्रांसिस कुमार

5 जीवन को प्रस्तुत करना

भाषा का यह काम उसके सारे अन्य कामों में शामिल हैं पर यदि हमने उसे अलग से नहीं जांचा तो सम्भव है हम उसे चूक जाएं। बड़ों की तरह बच्चे अक्सर भाषा का प्रयोग बीते हुए को याद करने के लिए करते हैं—कोई घटना, व्यक्ति या कोई छोटी-मोटी चीज़। जो चीज़ अब हमारे आसपास है, उसे हम शब्दों के जरिए फिर पैदा कर सकते हैं और इस तरह हम जो रचते हैं वह कई बार इतना यथार्थ दिखता है कि हम उस पर लम्बे समय तक बातचीत कर सकते हैं।

बच्चे अक्सर चीज़ों और अनुभवों को इसलिए प्रस्तुत करते हैं कि उन्हें स्वीकार कर सकें (शायद किसी गहरे भावनात्मक स्तर पर)। किसी चीज़ से डरा हुआ बच्चा उसके बारे में बीसियों बार बताता है जब तक वह अपने भीतर उसके लिए जगह नहीं बना लेता। खास तौर से जब बच्चा किसी नई बात से चौंकता है तो उसे आम अनुभवों में शामिल करने के उद्देश्य से कई बार दोहराता है। चौंकाने वाली घटना में जो अनिश्चय, भ्रम और कई बार डर छिपा रहता है, वह उसे दुहराने से दूर हो जाता है।

6 जुड़ना

जब हम किसी की कहानी सुनते हैं—जो उसके अपने या किसी दूसरे व्यक्ति के अनुभव पर आधारित होती—तो हम उस कहानी के चरित्रों और घटनाओं से स्वयं को जोड़ने की कोशिश करते हैं। कहानी से जुड़ने की खातिर हम अपनी मौजूदा ज़िन्दगी और यहां तक कि अपने पिछले सीमित अनुभवों को लांघ जाते हैं। जब कोई बच्चा किसी खिलौने की भावनाओं की चर्चा करता है तो वह स्वयं को खिलौने की स्थिति में रख रहा होता है। दूसरे पर क्या बीत रही है, यह हम भाषा के जरिए अनुभव कर सकते हैं।

7 तैयारी

बातचीत का विषय बहुत बार ऐसी घटनाएं होती हैं जो अभी घटी नहीं हैं और उनमें कुछ ऐसी भी होती हैं जो शायद कभी न घटें। बच्चे कई बार अपने डर, अपनी योजनाएं, अपेक्षाएं और अजीब परिस्थितियों में क्या होगा, इस पर अपने विचार प्रकट करते हैं। भविष्य की तस्वीर रचने में शब्द उनकी मदद करते हैं। कभी-कभी यह तस्वीर भविष्य को साकार बनाने में मदद करती है; कभी ऐसा भी होता है कि यह तस्वीर उन्हें भविष्य का सामना करने की सामर्थ्य देती है।

8 पड़ताल और तर्क

हरेक स्थिति में एक 'समस्या' छिपी होती है जिसे हल करने के लिए छोटे बच्चे को यह ढूंढना पड़ता है कि अमुक चीज़ अपने मौजूदा रूप में **'क्यों'** है। कई प्रश्न ऐसे होते है जिसका उत्तर छोटा बच्चा सफलतापूर्वक ढूंढ सकता है। जैसे, बस एकाएक क्यों रुकी? या उसे ठंडे पानी से नहाना क्यों पसन्द नहीं है? तीन साल का बच्चा इन 'समस्याओं' को समझ सकता है, हालांकि यह जरूरी नहीं कि सब बच्चे किसी बात का सटीक कारण साफ-साफ बतला सकें। प्रायः वे बच्चे ऐसा कर पाने में समर्थ होते हैं जिन्होंने बड़ों को भाषा के सहारे किसी चीज की पड़ताल करते या तर्क करते सुना हो अथवा जिन्हें ऐसा करने के लिए प्रोत्साहन मिला हो।

ऊपर दी गई समस्याओं के अलावा कई समस्याएं ऐसी होती हैं जिन्हें छोटा बच्चा 'वैज्ञानिक' अर्थ में नहीं सुलझा सकता। उदाहरण के लिए 'बारिश' क्यों होती है 'बहुत तेज हवा से पेड़ क्यों गिर जाता है जैसे सवालों का सही हल चार-पांच वर्ष के बच्चे की पहुंच के बाहर है। इसके बावजूद, ऐसी समस्याएं भी पड़ताल के लिए भाषा के प्रयोग के बहुत उम्दा मौके उपलब्ध करा सकती हैं। इससे फर्क नहीं पड़ता कि

दिया गया कारण सही है या नहीं। महत्व इस बात का है कि बच्चा भाषा का इस्तेमाल तर्क करने, किसी नई बात को बूझने के लिए करे। भाषा से यह काम लेते बड़ों को कोई बच्चा जितना अधिक सुनेगा, भाषा का यह काम उतना ही बच्चे की पहुँच के भीतर आता जाएगा।

भाषा के जिन आठ कामों की चर्चा अभी हमने की है, क्या आप उन्हें पहचान सकते हैं? अपनी परीक्षा लेने के लिए बच्चों की बातचीत के इन आठ उदाहरणों को भाषा के आठ कामों के तहत रखिए:

1 बादल चले गए। बारिश रुक गई।
2 मैं जाऊंगा अम्मा। वहां मिलेगा मम्मा।
3 इस तरह नहीं। ये देखो घुंडी।
4 पानी रोज़ सवेरे इतने सारे घरों में कैसे पहुंच जाता है?
5 मैं इस कप को यहां रखूंगा। फिर रामू को आवाज दूंगा।
6 ये मिठाइयां बिलकुल वैसी हैं जैसी जीत चाचा लाए थे।
7 दिवाली पर मुझे नई कमीज मिलेगी।
8 बिलकुल बाजार जैसा था। इतनी सारी बत्तखें इतना शोर मचा रही थीं।

उत्तर : 1 समझाना 2 खेलना 3 दूसरों के काम व ध्यान का संचालन 4 पड़ताल 5 अपने काम का संचालन 6 जुड़ना 7 तैयारी 8 जीवन को प्रस्तुत करना।

हमारी बात का असर हम पर ही पड़ता है

बच्चों के जीवन में भाषा की विभिन्न जिम्मेदारियों की इस चर्चा से एक बात यह स्पष्ट होती है कि भाषा एक बेहद लचीला माध्यम है। हम उसे जीवन की किसी भी परिस्थिति के अनुसार ढाल सकते हैं। उसे अपनी जरूरत के अनुसार ढाल कर हम परिस्थिति को भी अपने अधिक अनुकूल बना लेते हैं। रोजाना की ज़िन्दगी में इसके उदाहरण ढूंढे जा सकते हैं। जब हम किसी से नाराज़ होते हैं तो अपने गुस्से को प्रकट करने के लिए शब्द व स्वर चुनते हैं जो परिस्थिति पर हमारी इच्छा के अनुसार असर डालें। लड़ने की इच्छा हो तो हम कड़े शब्दों का प्रयोग करते हैं मामले को शांत करना हो तो नरम शब्दों और धीमे स्वर से काम लेते हैं।

हम कह सकते हैं कि भाषा को लचीले ढंग से इस्तेमाल करने की क्षमता काफी हद तक यह तय करती है कि जीवन की विभिन्न स्थितियों का सामना हम किस तरह करेंगे। एक स्तर पर हमारी भाषा किसी स्थिति में हमारी प्रतिक्रिया प्रकट करती है। एक अन्य स्तर पर हमारी भाषा उस स्थिति को, जिससे हम जूझ रहे हैं, प्रभावित करती है। हमारे इर्दगिर्द हर वक्त जो कुछ हो रहा होता है, भाषा उस सबसे निपटने में हमारी सहायता करती है। हम चाहे उस सब में स्वयं शरीक हों या सिर्फ उस पर विचार कर रहे हों, भाषा की मदद हमें दोनों दशाओं में मिलती है।

हम किसी घटना के प्रत्यक्ष गवाह हों या न हों, उस घटना को प्रस्तुत करने के लिए इस्तेमाल की गई भाषा हमारी प्रतिक्रिया पर असर डालती है। हजारों चीज़ें रोज़ हमसे बहुत दूर स्थित जगहों पर होती रहती हैं। ये चीजें हम तक अखबार की खबर के रूप में पहुंचती हैं। एक तरह से अखबार हमें किसी घटना की तस्वीर बनाने में मदद देता है, उसी तरह जैसे एक बच्चा सड़क पर कोई चीज़ देख कर अपनी

मां को बताए। अखबार या बच्चे द्वारा बनाई गई तस्वीर उतनी ही वास्तविक या सटीक होगी जितनी सटीक तस्वीर बनाने के लिए प्रयोग की गई भाषा होगी। कोई बयान कितना सटीक या सही है, यह प्रायः बयान देने वाले के इरादे पर निर्भर होता है—यानी सटीकता में हमेशा कमी-बेशी रहना स्वाभाविक है। यदि बच्चा एक दुर्घटना देख कर डर गया है तो सम्भव है कि वह उसे कुछ बढ़ा-चढ़ा कर प्रस्तुत करे। बढ़ा-चढ़ा कर कहने से वह अपने डर का औचित्य सिद्ध करता है और इस तरह उस दृश्य से, जिसे उसने देखा है, समझौता करने में समर्थ होता है।

आखिर बात यह है कि भाषा हमारी अपेक्षाओं पर असर डालती है। चीज़ों को धैर्यपूर्वक क्रम से समझाने का शौकीन आदमी दूसरों से ऐसी ही अपेक्षा करता है। इसी प्रकार चीज़ों की गहराई से पड़ताल करने वाला व्यक्ति उम्मीद करता है कि दूसरे उसकी पड़ताल में रुचि लेंगे। इस तरह के व्यक्ति पड़ताल और व्याख्या के लिए भाषा का प्रयोग करके एक ऐसा वातावरण रचते हैं जिसमें व्याख्या और पड़ताल महत्वपूर्ण काम माने जाते हों। इसके विपरीत यदि किसी संस्था या समुदाय में भाषा का प्रयोग इन उद्देश्यों के लिए नहीं किया जाता हो तो वहां बड़े हो रहे बच्चों को ध्यान से कोई बात समझाने या धैर्यपूर्वक तर्क करने की आदत शायद ही पड़ सके। यदि माता-पिता और अध्यापक भाषा का इस्तेमाल मुख्यतः बच्चों को नियंत्रण में रखने के लिए करते हों तो यह स्वाभाविक है कि बच्चे भाषा को नियंत्रण का साधन मानने लगेंगे। यह बहुत सम्भव है कि बड़े होकर वे ऐसा कोई काम न करना चाहें जिसके लिए उन्हें आदेश न दिया गया हो।

हमने इस अध्याय की शुरुआत इस प्रश्न के साथ की थी कि भाषा बच्चे के व्यक्तित्व—उसकी दृष्टि, क्षमताओं, मनोवृत्तियों, रुचियों और मूल्यों—को क्यों प्रभावित करती है। इस प्रश्न का उत्तर अब हम यह कह कर दे सकते हैं कि भाषा बच्चे के व्यक्तित्व को इसलिए प्रभावित करती है क्योंकि बच्चा भाषा द्वारा रचे गए वातावरण में जीता और बड़ा होता है। इस वातावरण को बनाने में अध्यापक काफी योग देता है। यदि अध्यापक बच्चे के जीवन में भाषा के विभिन्न कार्यक्षेत्रों के प्रति संवेदनशील है तो वह बच्चे की बौद्धिक और भावनात्मक जरूरतों के अनुकूल कदम उठा सकता है। अलग-अलग अवसरों पर बच्चे द्वारा प्रयोग की गई भाषा पर अध्यापक की प्रतिक्रिया बहुत महत्वपूर्ण होती है। यदि प्रतिक्रिया दिखाती है कि अध्यापक बच्चे द्वारा एक खास ढंग से प्रयोग की गई भाषा का उद्देश्य समझ रहा है तो ऐसी प्रतिक्रिया भाषा-प्रयोग के उस ढंग को और समृद्ध बनाएगी। इसके विपरीत यदि अध्यापक की प्रतिक्रिया 'सही' और 'गलत' के सम्बन्ध में किन्हीं धारणाओं पर आधारित हो तो वह बच्चे की स्वतंत्र अभिव्यक्ति और संवाद-क्षमता के रास्ते में बाधा खड़ी करेगी।

अध्याय-2

बात

हमारे स्कूलों में 'बात करना' प्रायः गलत समझा जाता है। यह माना जाता है कि यदि कोई बात कर रहा है तो ठीक से पढ़ाई नहीं कर रहा होगा। इसलिए जैसे ही अध्यापक बच्चों को बात करता हुआ देखता है, वह तुरंत उन्हें रोकता है। बात करने की छूट बच्चों को सिर्फ आधी छुट्टी में रहती है जब अध्यापक कोई महत्वपूर्ण काम नहीं कर रहा होता है।

बातचीत के प्रति उपेक्षा की वजह से हम शिक्षा में बातचीत के उपयोगों की अवहेलना करते आ रहे हैं। यह स्थिति सभी स्तरों पर है, पर प्रारम्भिक स्तर पर यह सबसे स्पष्ट है। नर्सरी व प्राइमरी स्कूल के बच्चों के लिए बातचीत करना सीखने और सीखी हुई चीज को सुदृढ़ बनाने का एक बुनियादी माध्यम है। सच तो यह है कि ऐसे अध्यापक, जो बच्चों को बात नहीं करने देते, किताबों व अन्य सामग्री के लिए पैसे की कमी की शिकायत करने के हकदार नहीं हैं। वे पहले ही एक ऐसा मूल्यवान साधन बेकार जाने दे रहे हैं जिसके लिए कोई पैसा नहीं खर्च करना पड़ता। इसलिए ऐसा स्कूल जहां छोटे बच्चे बात करने को स्वतंत्र नहीं, बड़ा फिजूलखर्च स्कूल कहलाएगा।

यह सही है कि बच्चे तरह-तरह के उद्देश्य लेकर बातचीत करते हैं और ये सभी उद्देश्य अध्यापक के लिए उपयोगी नहीं कहे जा सकते। उदाहरण के लिए बोरियत के मारे बात करने और दूसरे की निगाह से चूकी हुई चीज़ उसे दिखाने के लिए बात करने में फर्क है। दूसरी किस्म की बात बच्चे की सीखने की प्रक्रिया को बल देती है, जैसा कि दो बच्चों के इस संवाद में हो रहा है। ये बच्चे अध्यापिका की मेज के पास इंतजार में खड़े फुसफुसा रहे हैं और अध्यापिका रजिस्टर भरने में लगी है:

पहला बच्चा : देखा, आज बहनजी अंगूठी पहने हैं!

दूसरा बच्चा : तुमने पहले नहीं देखी?

पहला बच्चा : नहीं...हां, हां, मैंने पहले देखी है।

दूसरा बच्चा : अरे, लेकिन यह अंगूठी दूसरी है।

पहला बच्चा : बहनजी ने नई अंगूठी खरीदी है। यह पहले वाली से छोटी है।

दूसरा बच्चा : नहीं, पतली है।

यदि आप इस छोटे-से संवाद का विश्लेषण करें तो सीखने की उन सम्भावनाओं को पहचान सकेंगे जो बातचीत के जरिए ही इन दो बच्चों को उपलब्ध हुईं। यदि पहले बच्चे ने अध्यापिका की अंगूठी देख कर बात न छेड़ी होती तो उसे यह **याद करने** का मौका न मिलता कि बहनजी पहले भी अंगूठी पहनती थीं। यदि यह बातचीत न हुई होती तो दूसरे बच्चे को पुरानी और नयी अंगूठी में **फर्क देखने** का अवसर न मिलता, न ही यह **समझने** का अवसर मिलता कि 'छोटी' और 'पतली' में क्या भिन्नता है।

बातचीत के इन उपयोगों के प्रति सचेत होने के लिए जरूरी है कि हम बच्चों की बात सुनने की आदत डालें। यह कहना आसान है, पर इसे करना इसलिए मुश्किल है क्योंकि बड़े यह मानकर चलते हैं कि उनका काम बच्चों को निर्देश देना है और बच्चों का काम सुनना है। बच्चों की बातचीत के अच्छे श्रोता बनने के रास्ते में यह मान्यता अड़चन पैदा करती है। अच्छे श्रोता से मेरा आशय एक ऐसे व्यक्ति से है जो बात के सूक्ष्म उद्देश्य और बातचीत के कारण पैदा हुई सीखने की सम्भावनाओं को धैर्यपूर्वक पहचान सके

किसी भी आम स्थिति में बातचीत में मस्त बच्चे ये दस क्रियाएं करते नजर आ सकते हैं:

1 जिस चीज पर अभी तक ध्यान नहीं दिया, उस पर ध्यान देना,
2 उसे मोटे तौर पर या बारीकी से देखना,
3 अपने-अपने निरीक्षणों का आदान-प्रदान करना,
4 निरीक्षणों को तरतीब से लगाना,
5 दूसरे के निरीक्षण को चुनौती देना,
6 निरीक्षण के आधार पर तर्क करना,
7 भविष्यवाणी करना,
8 पिछले किसी अनुभव को याद करना,
9 दूसरे की भावनाओं या उसके अनुभवों की कल्पना करना,
10 किसी काल्पनिक स्थिति में स्वयं की भावनाओं की कल्पना करना।

अगर आप बच्चों की बातचीत को ध्यानपूर्वक सुनने की आदत डाल लें तो आप जल्दी ही इन दस और कई अन्य सम्भावनाओं में फर्क करने में समर्थ हो जाएंगे। आप यह भी समझने लगेंगे कि ये सम्भवनाएं किस तरह विश्लेषण और तर्क करने की क्षमताओं के विकास से जुड़ी हैं। इस अध्याय में आगे चल कर दी गई गतिविधियां आपको इन क्षमताओं का विकास करने वाली परिस्थितियां गढ़ने में मदद देंगी।

बच्चों की बातचीत को शिक्षण सामग्री के तौर पर इस्तेमाल करने के इच्छुक अध्यापक को पहले बातचीत के अनुकूल वातावरण पैदा करना होगा। अपने कार्य-व्यवहार और टीका-टिप्पणियों के जरिए अध्यापक को बच्चों में यह विश्वास पैदा करना होगा कि वे बात करने के लिए स्वतंत्र हैं। इसका आशय अराजकता को न्योता देना नहीं है। उलटे, ज़रूरत इस बात की है कि:

*हर बच्चा यह महसूस करे कि जब वह कुछ कहेगा तो उसे सुना जाएगा और
*सभी बच्चे यह महसूस करें कि अध्यापक को उनका बोलना अच्छा लगता है।

कक्षा में बच्चों को बातचीत के लिए प्रोत्साहित करने वाले अवसरों को हम पांच कोटियों में रख सकते हैं:

1 अपने बारे में बात करने के अवसर देना

सब बच्चे अपनी जिन्दगी के बारे में–उन घटनाओं के बारे में जो हो चुकी हैं और उनके बारे में भी जो अभी नहीं हुई हैं–बात करने को उत्सुक रहते हैं बशर्ते कि उन्हें इसके लिए प्रोत्साहन और मौका दिया जाए। कई अध्यापक बच्चों की व्यक्तिगत ज़िन्दगी और स्कूल में उनकी पढ़ाई के बीच कोई सम्बन्ध नहीं देख पाते। वे इस बात पर जोर देते हैं कि कक्षा में सिर्फ पाठ्यपुस्तकों में दी गई सामग्री पर ही चर्चा हो। अध्यापक की इस मान्यता के कारण कई बच्चे कक्षा में किसी भी किस्म की हिस्सेदारी नहीं निभा पाते।

अध्यापक जिन चीजों पर चर्चा करते हैं, वे बच्चों को आकर्षित नहीं कर पातीं, और बच्चों के व्यक्तिगत अनुभव (जैसे किसी रिश्तेदार का आना, आंधी और बारिश में घर की हालत, या बीमार पड़ना) अध्यापक को रास नहीं आते।

ऐसी स्थिति बच्चों को पाठ्यक्रम से एकदम काट देती है। अध्यापक चाहें तो उनके इस अलगाव को रोक सकते हैं। इसके लिए उन्हें बच्चों की घरेलू ज़िन्दगी और उनके पिछले अनुभवों की चर्चा के अवसर पैदा करने होंगे। यदि बच्चों को इन चीजों पर बात करने के लिए प्रोत्साहित किया जाए तो धीरे-धीरे वे कई तरह के अनुभवों से जुड़े भावों और विचारों को प्रकट करने में समर्थ हो जाएंगे। साथ ही वे स्कूल के पाठ्यक्रम के विभिन्न विषयों (जैसे विज्ञान, भूगोल, नागरिक शास्त्र) में शामिल ज्ञान से एक गहरे, व्यक्तिगत स्तर पर सम्बन्ध बना सकेंगे।

2 स्कूली अनुभवों पर बात करने के अवसर देना

स्कूल का परिवेश खोजबीन और निरीक्षण का एक शानदार माध्यम है। स्कूल कहीं भी हो, उसके इर्दगिर्द ऐसी कई छोटी-छोटी चीज़ें होती हैं जिनसे विस्तृत जांच और बहस की सामग्री मिलती है। दुकानें, पेड़, पत्थर, मकान, सड़क, बाड़, मिट्टी, फाटक, घोंसले, छत्ते, फूल, तितलियां, खुली नाली, नल और तमाम चीजें स्कूल के पड़ोस में ढूंढी जा सकती हैं और बारीक अवलोकन, अवलोकनों के आदान-प्रदान, सच के निर्धारण और दूसरी चीज़ों से उसके सम्बन्ध की खोज के लिए काम में लाई जा सकती हैं।

छोटे बच्चों के साथ यह सब करने के लिए बातचीत एक उम्दा माध्यम है। जैसा कि आगे दी गई गतिविधियों से स्पष्ट होगा, यह कतई जरूरी नहीं कि अध्यापक बहुत सारे बच्चों को औपचारिक रूप से भ्रमण के लिए ले जाए। दरअसल तीन-चार बच्चों को किसी चीज की रपट लिखने के लिए भेजना उपयोगी हो सकता है। यह जरूर है कि भ्रमण में खूब मज़ा आता है, अतः जो अध्यापक बच्चों को स्कूल से दूर किसी जगह पर ले जाने का खर्च उठा सकते हों, उन्हें ऐसा अवश्य करना चाहिए। पर जो अध्यापक बच्चों को किसी संग्रहालय या डाकखाने तक नहीं ले जा सकते, उन्हें इस बात का बहाना नहीं बनाना चाहिए कि वे बच्चों को स्कूल के करीब एक टूटी पुलिया या स्कूल के पिछवाड़े गंदे पानी की निकासी तक भी नहीं ले जा सकते। महत्वपूर्ण चीज यह है कि सभी बच्चों को भ्रमण में देखी गई सब चीजों पर बात करने का पर्याप्त अवसर मिले।

3 तस्वीरों पर चर्चा करना

ऐसी बातचीत जो सर्जना और विश्लेषण को प्रोत्साहित करती हो, तस्वीरों के जरिए अच्छी तरह की जा सकती है। तस्वीरें कैसी भी हो सकती हैं–अखबारों और पत्रिकाओं के विज्ञापनों या खबरों के साथ छपे चित्र, कैलेंडरों, टिकटों, लेबलों और पोस्टरों पर छपे चित्र। ये सभी काम में लाए जा सकते हैं। इस प्रकार तस्वीरों के स्रोत बहुत व्यापक हैं और किसी छोटे गांव में भी ढूंढे जा सकते हैं। अध्यापक साल दर साल इस्तेमाल के लिए तस्वीरों का एक संग्रह बना सकता है।

इन स्रोतों के अलावा स्कूलों को थोड़ा अतिरिक्त पैसा खर्च करके तस्वीरों वाला बाल-साहित्य खरीदने की कोशिश करनी चाहिए। परिशिष्ट-1 में बाल-साहित्य की एक सूची दी गई है जिसमें अधिकांश किताबें चित्र-कहानी (कामिक्स नहीं) की हैं। इन किताबों के एक सैट की कीमत करीब 100/-रु० आएगी। एक बार खरीदा गया सैट काफी समय चलेगा, बशर्ते कि किताबों को संभाल कर रखा और इस्तेमाल किया जाए। इसका प्रयोग करने के इच्छुक अध्यापकों को चाहिए कि किताबों की देखरेख के काम में बच्चों को शामिल करें और उन्हें इसकी ट्रेनिंग दें कि किताब को कैसे उठाना-रखना है, कोने मोड़े या थूक लगाए बिना पन्ना कैसे पलटना है। ऐसी छोटी-छोटी बातें

ध्यानपूर्वक ट्रेनिंग देकर सिखाई जा सकती है। ये छोटी-छोटी चीजें आगे जाकर बच्चों में किताबों के प्रति आदर पैदा करेंगी और उन्हें सीखने का साधन मानने की प्रवृत्ति विकसित करेगी। ये चीजें बच्चे में चीजों को सहेज कर रखने की प्रवृत्ति का विकास करने में मदद देंगी।

बच्चों के बीच बैठ कर बगैर किसी तैयारी के, बिलकुल अनौपचारिक ढंग से किसी तस्वीर के बारे में बातचीत करना भी उपयोगी सिद्ध हो सकता है। लेकिन यदि हम देखने के विभिन्न पहलुओं के बारे में सचेत हो जाएं तो बच्चों की भाषा के विकास की दृष्टि से हम ऐसी बातचीत को और भी अधिक उपयोगी बना सकते हैं। अध्यापक का हर प्रश्न बच्चों की प्रतिक्रिया को एक निश्चित ढंग से प्रभावित करता है। सवालों के जरिए बच्चों की निगाह और प्रतिक्रिया को विस्तार देनेकी क्षमता हम किस प्रकार हासिल कर सकते हैं? प्रतिक्रिया के स्तर, जिनकी तरफ बच्चों का ध्यान हम प्रश्नों की मदद से मोड़ सकते है, ये रहें:

1 **ढूंढना** : इस स्तर पर हम बच्चों से केवल इतना कहेंगे कि वे चित्र में दिखाई गई चीजों को ढूंढें। हम इस तरह के प्रश्न पूछ सकते हैं: 'इस चित्र में क्या है?' 'क्या इस चित्र में एक चूहा है?' 'साइकिल पर कौन बैठा है?' 'लड़का कितना बड़ा है?'

2 **तर्क करना** : प्रतिक्रिया के इस स्तर का सम्बन्ध कारण बताने की क्षमता से है। चित्र में दिखाई गई किसी बात का जो भी कारण बच्चा बताए, अध्यापक को उसे स्वीकार करना चाहिए। अध्यापक स्वयं भी कारण बता सकता है—पर केवल एक सम्भव उत्तर के तौर पर, अंतिम उत्तर के तौर पर नहीं। प्रश्नों के उदाहरण : 'नन्हीं लड़की क्यों रो रही है?' 'मोटर साइकिल का पिछला हिस्सा हमें दिखाई क्यों नहीं दे रहा?' 'चूहा क्यों छिपा है?'

3 **आरोपण** : इस स्तर पर हम बच्चे से खुद को चित्र में आरोपित करने को कहते हैं। अतः इस स्तर पर प्रश्न पूछने का उद्देश्य बच्चे को एक कल्पित स्थिति में स्वयं को डालने, कौन क्या कहेगा यह कल्पना करने, और उन्हें कैसा लगेगा यह सोचने को प्रोत्साहित करना है। प्रश्नों के उदाहरण: 'यदि तुम इस पेड़ पर बैठे होते तो तुम्हें कैसा-क्या दिखाई देता?' 'छोटी लड़की साइकिल पर बैठे आदमी से क्या कह रही है?' 'चूहा क्या सोच रहा है?'

4 **भविष्यवाणी** : इस स्तर का सम्बन्ध चित्र में दिखाई गई स्थिति के बाद की घटनाओं का अनुमान करने से है। बच्चों को यह सोचने के लिए प्रेरित करना है कि अब आगे क्या होगा। प्रश्नों के उदाहरण: 'यह आदमी अब कहां जाएगा?' 'नन्हीं लड़की घर पर क्या करेगी?' 'वह घर कैसे पहुंचेगी?'

5 **सम्बन्ध बैठाना** : अब हम ऐसे प्रश्न पूछेंगे जो बच्चों को चित्र में दिखाई गई स्थिति से मिलती-जुलती कोई चीज अपनी जिन्दगी में ढूंढने को प्रेरित करें। प्रश्नों के उदाहरण: 'तुम कभी मोटर-साईकिल पर बैठे हो?' 'बैठकर कैसा लगता है?' 'क्या तुम कभी किसी अजनबी के साथ रहे हो?' 'उस दिन फिर क्या हुआ?'

4 कहानियां सुनना और उन पर चर्चा करना

कोई कहानी सुनते वक्त हमारा ध्यान उसमें चित्रित घटनाओं और चरित्रों की तरफ भागता है। कई कहानियों का सम्बन्ध हमारी देखी हुई घटनाओं से नहीं होता, पर हम उनकी कल्पना कर लेते हैं। इसी तरह भले ही हमने कहानी के चरित्रों जैसे लोग कभी न देखे हों, फिर भी हम उनकी तस्वीर मन में बना लेते हैं। इस प्रकार अपरिचित घटनाएं और लोग दुनिया के उस नक्शे में शामिल हो जाते हैं जो हमने अपने दिमाग में बना रखा है। बाद में इन घटनाओं की हम ठीक उसी तरह चर्चा कर सकते हैं जिस तरह अपनी जिन्दगी में सचमुच घटी घटनाओं की चर्चा करते हैं। फिल्मों, किताबों और अखबारों में छपी अधिकांश खबरों की चर्चा लोग इसी तरीके से करते हैं। कहानी चाहे किसी असली घटना के बारे में हो या किसी के द्वारा कल्पित घटना के बारे में, वह एक नई सामग्री हमारे ध्यान में लाती है और हम इस सामग्री को बगैर ज्यादा कोशिश या परेशानी के अपने मन में जगह दे देते हैं।

कहानी सुनते समय हम घटनाक्रम और चरित्रों के व्यवहार की कल्पना करते चलते हैं। दूसरी तरफ जब हम स्वयं कोई कहानी सुनाते हैं तो उसमें शामिल अनुभवों को व्यवस्थित करते चलते हैं। ये अनुभव वास्तविक हों तो उन्हें ज्यों का त्यों रखने की कुछ चिंता अवश्य होती है। पर ऐसा कम ही होता है कि कोई अपने अनुभव को एकदम हू-ब-हू सुना सके। छोटी-मोटी फेरबदल हो ही जाती है क्योंकि कुछ बातें हमें दूसरी बातों से ज्यादा महत्वपूर्ण लगती हैं। यदि हमारी कहानी वास्तविक अनुभवों के बारे में न हो तो हम उसे कुछ ज्यादा आज़ादी से प्रस्तुत करते हैं। शायद तब हमारा मुख्य उद्देश्य अपने श्रोता की दिलचस्पी जगाना होता है। कहानी चाहे असली हो या काल्पनिक, उसमें दो चीज़ें अवश्य रहती हैं:
1- जीवन की घटनाओं, चरित्रों आदि का पुनर्योजन, और 2- सुनने वाले का ध्यानाकर्षण। ये दोनों बातें भाषा के कुशल इस्तेमाल पर निर्भर है। दरअसल हरेक कहानी हमसे भाषा की चतुरता की मांग करती है और कहानियां सुनने का अनुभव हमें भाषा के चतुर कौशल के नमूने देता है। इसी कारण कहानी कहना नन्हें बच्चों के अध्यापक के लिए एक बढ़िया साधन है।

कुछ अध्यापक कहानी सुनाने को एक कला मानते हैं। वे सोचते हैं कि इनेगिने लोग ही अच्छी तरह कहानियां सुना सकते हैं। यह एक दुर्भाग्यपूर्ण मान्यता है क्योंकि इसकी वजह से बच्चे कहानियां सुनने के आनन्द से वंचित रह जाते हैं। यदि कोई कहानी अच्छी है तो बच्चे उसे सुन कर जरूर खुश होंगे। कहने का कौशल तो समय और अभ्यास से ही आएगा। असली बात है अच्छी कहानियां चुनना और उन्हें बार-बार सुनाना। कोई कहानी सिर्फ एक बार सुनाने के लिए नहीं होती और अच्छी कहानियां तो ढेरों बार सुनाने लायक होती हैं।

कहानी सुना कर उस पर चर्चा करना ज़रा टेढ़ा मामला है। मैंने ऐसे अनेक अध्यापक देखे हैं जो कहानी की सीख की चर्चा करने को उत्सुक रहते हैं। कहानी समाप्त होते ही वे पूछ उठते हैं: 'इस कहानी से तुम्हें क्या शिक्षा मिली?' एक सार्थक संवाद की शुरुआत के लिए यह प्रश्न बिलकुल बेकार है। कहानी के नैतिक मूल्य का (यदि कहानी में ऐसा कोई मूल्य है) बच्चों के लिए कोई विशेष आकर्षण नहीं होता। उनके लिए तो कहानी का ही महत्व होता है। नैतिक मूल्य के बारे में पूछने वाला अध्यापक अपनी ही मेहनत को गुड़गोबर कर देता है। इतनी ही फ़िज़ूल उन अध्यापकों की मांग होती है जो कहानी याद करने पर जोर देते हैं। वे चाहते हैं कि बच्चे पूरी कहानी हू-ब-हू सुना दें। वे यह मांग इतने नियमित रूप से करते हैं कि बच्चे कहानी का आनन्द लेना छोड़ अपने ऊपर लादी जाने वाली मांग की चिंता में डूब जाते हैं।

कहानी सुनाते वक्त श्रोता के लिए महत्वपूर्ण चीज कहानी से अपना सम्बन्ध स्थापित करना है, और हमें यह समझना चाहिए कि हर बच्चा यह सम्बन्ध एक अलग ढंग से स्थापित करता है। उसका व्यक्तित्व

और उसके पिछले अनुभव कहानी के प्रति बच्चे की प्रतिक्रिया को प्रभावित करते हैं। हो सकता है कि बच्चा किसी चरित्र की कल्पना कहानी में दिए विवरण से एकदम अलग रूप में करे। सम्भव है कि उसे कोई घटना भावनात्मक रूप से बाकी सब घटनाओं से ज्यादा सार्थक लगे। कहानी और उसके चरित्रों की ऐसी पुनर्रचना करना, जो स्वयं को सार्थक लगे, हर बच्चे का मौलिक अधिकार है। उदाहरण के लिए, हो सकता है कि बच्चा पृष्ठ पांच पर दी गई कहानी में अध्यापक की कल्पना एक महिला के रूप में करे। ऐसा अध्यापक, जो चरित्रों की कल्पना किसी भी ढंग से करने के बच्चे के अधिकार को स्वीकार करता है, बच्चों को इस बात की पूरी आज़ादी और अवसर देगा कि वे कहानी के बारे में किसी भी तरह से बात करें—उसे तोड़ें-मरोड़ें, उसे बढ़ाएं, उसके चरित्रों की अदला-बदली करें या स्वयं कहानियां गढ़ें। ऐसे अवसर कहानी कहने के फौरन बाद देना जरूरी नहीं है। प्रायः ठीक यही रहता है कि कहानी सुनाने के बाद कोई और एकदम अलग गतिविधि शुरू की जाए।

5 अभिनय करना

कहानी और नाटक में सम्बन्ध है, इसलिए अध्यापक आसानी से एक को दूसरे से जोड़ सकता है। कहानी को ध्यानपूर्वक सुन रहा बच्चा उसमें चित्रित भूमिकाओं को चुपचाप ग्रहण कर रहा होता है। यही चीज नाटक में होती है, पर अधिक मुखर रूप में। नाटक में बच्चों को विभिन्न भूमिकाओं को बातचीत, हाव-भाव और शरीर के जरिए प्रस्तुत करने का मौका मिलता है। कहानी के श्रोता की तरह नाटक में भाग लेते वक्त भी उन्हें स्वयं को किसी दूसरे पर आरोपित करना होता है और उसकी निगाह से चीजों को देखना होता है। फ़र्क यही है कि नाटक में यह ज्यादा सक्रियता पूर्वक करना होता है, कल्पित स्थिति और चरित्रों के अनुभव शब्द और हाव-भाव ढूंढने पड़ते हैं। इस सब में तुरतबुद्धि से अभिनय करने के लिए सुनहरा मौका रहता है जो नाटक को बातचीत के विस्तार के लिए इस्तेमाल करने का मुख्य आधार है।

दुर्भाग्यवश स्कूलों में होने वाली ज्यादातर नाटकीय गतिविधियों में तुरतबुद्धि के लिए जगह नहीं होती। बच्चों को निश्चित भूमिकाएं दे दी जाती हैं और उन्हें संवाद याद करने को कह दिया जाता है। नाटक का उपयोग किसी त्यौहार या अतिथि के आगमन जैसे खास अवसरों के लिए किया जाता है।नाटक के इस उपयोग के भी कुछ न कुछ फायदे तो होंगे ही, पर इससे बच्चों की भाषा के विकास में कोई खास मदद नहीं मिलती। थोड़े-से बच्चे ही नाटक में हिस्सा लेते हैं, बाकी सिर्फ देखते हैं। तैयारी और अंतिम प्रदर्शन के दौरान लगातार सबको यह डर बना रहता है कि कोई गलती न हो जाए। ऐसे नाटकों में आजादी और आनन्द की गुंजाइश नहीं रह जाती। एक भाषायी गतिविधि के रूप में नाटक के इस्तेमाल के लिए ये दो चीजें—आज़ादी और आनन्द—बहुत ज़रूरी हैं।

जो अध्यापक नाटक का भाषा शिक्षण में उपयोग करना चाहते हैं, उन्हें याद रखना चाहिए कि नाटक बच्चों के लिए कोई विशेष या निराली चीज़ नहीं है—वह तो उनकी जिन्दगी का भाग है। नकल उतारना, किसी चीज को बढ़ा-चढ़ा कर बताना, स्वांग करना जैसी नाटकीय युक्तियों का प्रयोग बच्चे करते ही रहते हैं। बच्चों के अपने पारम्परिक खेलों में भी नाटक का एक विशेष स्थान रहता है। ऐसा बच्चा मुश्किल से मिलेगा जिसमें नाटकीय कौशल न हो। पर अनेक बच्चे अपने नाटकीय कौशल का कक्षा में प्रयोग करने को उत्सुक नहीं होते। उन्हें लगता है कि कक्षा इसके लिए ठीक जगह नहीं है। ऐसा माहौल जिसमें नाटक सम्भव और सही लगे, कक्षा में अध्यापक की पहल से ही बन सकता है। पर माहौल बनाने की कोई एक तकनीक नहीं है। आप इसके लिए धीरे-धीरे प्रयास कर सकते हैं। और इसके लिए जरूरी है कि आप बच्चों को स्वभाविक रूप से यथार्थ ज़िन्दगी के बारे में बात करने को प्रोत्साहित करें, बच्चों की बातचीत को ध्यान लगाकर सुनें और मधुर व्यवहार करें।

दूसरी खास बात यह है कि प्रदर्शन के लिए नाटक करने और नाटक के रोजमर्रा के इस्तेमाल में अन्तर है। हमारा विषय रोजमर्रा का नाटक है और उसके लिए पहले से तैयार पटकथा, संवाद, पोशाकें, रिहर्सल और रोशनी की व्यवस्था बेमानी है। अभिनय के लिए किसी भी घटना की कहानी पर्याप्त है। नाटकीय कहानियों के सबसे अच्छे उदाहरण आपको प्रायः बच्चों की बातों से मिल सकते हैं, बशर्ते कि बच्चे जो रोज़ देखते, महसूस करते हैं उसके बारे में बात करने की स्वतंत्रता वे अनुभव करते हों।

बस कैसे रुकी, कुछ लोग उतरे, कुछ चढ़े, बस फिर से कैसे चली और इस समय उसके अन्दर क्या हो रहा है—यह कक्षा के पूरे 40 बच्चों के अभिनय करने लायक बढ़िया कथानक है। दूसरी तरफ अध्यापक द्वारा सुनाई या पढ़ी गई कहानियां भी नाटक के लिए जोरदार सामग्री दे सकती हैं। यदि कहानी में थोड़े-से चरित्र हैं तो पांच-पांच बच्चों की टोलियां उस पर अलग-अलग काम कर सकती हैं या उन्हें अलग-अलग कहानियां दे दी जाएं। टोलियों में प्रतियोगिता करवाने की कोई तुक नहीं है। इससे अनावश्यक बेचैनी और अध्यापक पर निर्भरता पैदा होगी।

यदि आप छोटी उम्र से ही स्वतः स्फूर्त नाटक का इस्तेमाल शुरू कर देते हैं तो वह पढ़ने के कौशल के विकास की नींव का काम करेगा। नाटक करने तथा पढ़ने में सीधा रिश्ता न हो, पर रिश्ता है। नाटक शब्दों और शरीर की भंगिमाओं (हावभाव, झुकना आदि) को सचेत होकर प्रतीकों की तरह उपयोग करने का एक विशिष्ट मौका देता है कहानी सुनने की तरह अभिनय करते समय भी बच्चे दुनिया की दिनचर्या में प्रतीक रूप से हिस्सा लेते हैं—यानी वे घटनाओं में सीधे उपस्थित हुए बगैर उनमें हिस्सा लेते हैं। यही क्षमता एक अच्छे पाठक में होती है। जो चीजें उसकी आंखों के आगे मौजूद नहीं हैं, उन्हें वह 'देखता' चलता है और उन पर इस तरह प्रतिक्रिया करता चलता है मानो वे उसके सामने मौजूद हों।

अध्यापक की प्रतिक्रिया

स्कूल में दाखिल होने तक बच्चे अपनी मातृभाषा की बुनियादी संरचनाओं पर अच्छा-खासा अधिकार पा चुके होते हैं। उन्हें न केवल तमाम तरह के कार्यों के लिए भाषा का प्रयोग करना होता है, बल्कि वे यह भी खूब समझ चुके होते हैं कि भिन्न-भिन्न सन्दर्भों और श्रोताओं के हिसाब से भाषा को समन्वित करना कितना जरूरी है। पांच वर्ष का बच्चा सन्देशों को कार्य में बदलना (जैसे, कहने पर पानी का गिलास लाना और उसे वापस सही जगह रखना) जानता है। वह लोगों की बातचीत की सहायता से उनके चरित्र और आपसी रिश्तों का अनुमान भी कर लेता है। छोटे बच्चे को ये क्षमताएं किसी के सिखाने से नहीं, रोजाना के जीवन से प्राप्त होती हैं। बच्चे के आसपास जो कुछ हो रहा होता है, वह उसे अपनी सोच-विचार की छलनी से छान कर अपने भाषा-संयंत्र का हिस्सा बना लेता है।

हमें ये क्षमताएं स्वयं हासिल करने का श्रेय बच्चे को देना चाहिए। हम बच्चे को कोई बिल्कुल नई चीज नहीं दे सकते। केवल ऐसी परिस्थितियां बना सकते हैं जिनमें बच्चा अपनी मौजूदा क्षमताओं का और विकास कर सके। बातचीत के सन्दर्भ में ऐसी परिस्थितियां रचने की मुख्य शर्त है बच्चे की बात पर अपनी प्रतिक्रिया के प्रति सचेत होना। हर बार बच्चे की बात सुनते समय हमें चाहिए किः

1 उसे पूरी बात कहने दें,

2 वह जो कह रहा है उसमें रुचि लें,

3 मतभेद व्यक्त करने की इच्छा हो तो उस पर काबू करें,

4 बच्चे ने जो कहा है उस पर अपनी प्रतिक्रिया विस्तार से यानी, अधिक शब्दों में और ज्यादा समृद्ध वाक्य रचना का प्रयोग करते हुए दें। इतना कहना काफी नहीं है कि 'अच्छा' या 'यह अच्छा है।' उदाहरण के लिए यदि बच्चे ने कहा, 'गिलहरी पेड़ पर' तो अध्यापक की प्रतिक्रिया हो सकती है– 'उसने गिलहरी को पेड़ पर चढ़ते देखा?'

5 घटना और जानकारी मांगे या बच्चे का ध्यान विषय के किसी नये पहलू की तरफ खींचे।

बच्चों से इस तरह बात करने के लिए काफी अभ्यास जरूरी है। सबसे जरूरी यह महसूस करना है कि बातचीत बच्चे के लिए सीखने का एक महत्वपूर्ण साधन है और उसका बच्चे के सामाजिक व्यवहार और व्यक्तित्व पर गहरा असर पड़ता है।

अक्सर चुप रहने वाले बच्चे अध्यापक के लिए दिक्कत पेश कर सकते हैं। सम्भव है कि आपकी कक्षा के कुछ बच्चे बात करने की अपेक्षा खेलने या चीजें बनाने में, ज्यादा दिलचस्पी दिखाएं। लेकिन यदि कोई बच्चा अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करने, सवाल पूछने और दूसरों को यह बताने के लिए कि वह क्या कर रहा है, बिलकुल उत्सुक न हो तो ऐसे बच्चे की ओर कुछ विशेष ध्यान देना बुद्धिमानी का काम होगा। मुमकिन है कि उसे घर पर नाना प्रकार से हतोत्साहित किया गया हो या उस पर दबाव डाले गए हों। चुप्पी उसके व्यक्तित्व, विशेषतः दूसरों के सन्दर्भ में उसकी आत्मछवि को पहुंची चोट की एक अभिव्यक्ति हो सकती है। घर के दमघोंटू माहौल का असर काफी गहरा होता है। पर उसे दूर करना असम्भव नहीं है। एक संवेदनशीलन अध्यापक, जो समस्या की जड़ को समझता हो, दुनिया के साथ बच्चे के सम्बन्धों में चमत्कारपूर्ण परिवर्तन ला सकता है।

कुछ गतिविधियां

यहां केवल थोड़ी-सी गतिविधियां दी गई हैं जिन्हें कोई भी अध्यापक एक साधारण कक्षा में आयोजित कर सकता है। हर बार किसी गतिविधि में थोड़ी- सी फेरबदल करने से बच्चे पिछली बार के मुकाबले और ज्यादा उत्साह महसूस करेंगे। इसलिए इन गतिविधियों को बार-बार कीजिए और हर बार इनमें कुछ नया जोड़िए। आप जो चीजें जोड़ें उनका ब्यौरा रखिए ताकि आप किसी नए सहयोगी को अपने प्रयोगों की जानकारी दे सकें। यहां दी गई लगभग हरेक गतिविधि दर्जनों नई संभावनाओं की शुरुआत बन सकती है।

एक
क्या देखा?

पहला चरण : एक बच्चे से कहिए कि वह बाहर जाए, देखे कि बाहर क्या-क्या हो रहा है, और लौटकर दूसरों को बताए। उदाहरण के लिए वह बताएगा कि उसने एक ठेला, दो दुकानें और एक साइकिल देखी।

दूसरा चरण : अब बाकी बच्चे उससे सवाल पूछेंगे। बच्चे गोल घेरे में बैठें और एक बच्चा एक ही सवाल पूछे। उदाहरण के लिए एक बच्चा पूछ सकता है, 'साइकिल के हैंडिल से क्या लटका था?' जवाब है, 'एक टोकरी लटकी थी।' अगला सवाल, 'टोकरी का रंग कैसा था?'

तीसरा चरण : जब सारे बच्चे एक-एक सवाल पूछ लें तो अध्यापक उस बच्चे से पूछे जो बाहर गया था कि उसे कौन-सा प्रश्न सबसे अच्छा लगा। मान लीजिए कि उसका जवाब हो–'शशि का सवाल सबसे अच्छा था'–तो अगला सवाल पूछिए : 'वह सवाल क्या था?'

चौथा चरण : अब खेल के अगले दौर की शुरुआत शशि से होगी। उससे कोई ऐसी चीज देखने को कहिए जो पहले बच्चे ने नहीं देखी थी। शशि के वापस आने पर बच्चों से कहें कि वे नए सवाल पूछें–ऐसे सवाल जो पहले किसी ने नहीं पूछे।

दो

खोजियों की खबर

पांच या छः बच्चों की टोली को स्कूल की इमारत के आसपास या भीतर किसी निश्चित चीज या जगह का अध्ययन करने के लिए भेजिए। जैसे वे पेड़ों के एक झुंड, चाय की गुमटी, टूटे हुए पुल या घोंसले का मुआयना करने जा सकते हैं। उनसे कहिए कि वे सावधानी से उस चीज की खोजबीन करें और अपने निरीक्षणों की आपस में चर्चा करें।

जिस समय खोजी-दल बाहर गया हो, बाकी बच्चों को उस चीज के बारे में विस्तार से बताएं। जैसे यदि खोजी-दल चाय की गुमटी का अध्ययन करने गया है तो बच्चों को बताएं कि वहां क्या-क्या चीजें उपलब्ध हैं (बच्चों से पूछें भी), उसे कौन चलाता है, वहां उपलब्ध चीजें, कहां-कहां से आती हैं, आदि।

वापस आने पर खोजी-दल कक्षा के सवालों का सामना करे। प्रश्न पूछने में अध्यापक की बारी भी आनी चाहिए।

अगली बार किन्हीं और बच्चों का खोजी-दल बनाइए।

तीन

बूझो, मैंने क्या देखा?

एक बच्चा बाहर जाए, दरवाजे पर या कक्षा से कुछ दूर खड़े होकर आसपास दिखाई दे रही सैकड़ों चीजों में से कोई एक चुन ले। वह चीज कुछ भी हो सकती है—पेड़, पत्ता, गिलहरी, चिड़िया, तार, खम्भा, पत्थर। लौट कर वह उस चीज के बारे में सिर्फ एक वाक्य बोले, जैसे, 'मैंने एक भूरी चीज देखी।'

अब इस बच्चे से एक प्रश्न पूछ कर उस चीज का अनुमान लगाने का मौका कक्षा के हर बच्चे को मिलेगा। उदाहरण के लिए—

पहला बच्चा : 'क्या वह पतली है?'
उत्तर : 'नहीं'।
दूसरा बच्चा : 'वह कितनी बड़ी है?'
उत्तर : 'वह काफी बड़ी है।'
तीसरा बच्चा : 'क्या वह कुर्सी जितनी बड़ी है?'
उत्तर : 'नहीं, कुर्सी से छोटी है।'
चौथा बच्चा : 'क्या वह मुड़ सकती है?'

अन्त में सही अनुमान लग चुकने के बाद कुछ बच्चों को अपने प्रश्नों के उत्तरों से आपत्ति हो सकती है। उदाहरण के लिए किसी को यह आपत्ति हो सकती है कि रंग भूरा नहीं, मिट्टी जैसा था। ऐसी स्थिति में बारीक अन्तर देख पाने में अध्यापक को बच्चों की मदद करनी होगी।

चार

जो कहा सो करना

बच्चों से कहिए कि वे ध्यान से सुनें और जो बताया जाए उसे करें। पहले एकदम सरल निर्देश दीजिए और पूरी कक्षा से निर्देश का एक साथ पालन करने को कहिए।

उदाहरण : 'अपना सिर छुओ।'
'अपनी दाहिनी आंख बंद करो।'
'सिर पर ताली बजाओ।'

कक्षा को दो समूहों में बांट दीजिए। आप पहले समूह को निर्देश देंगे और इस समूह के बच्चे दूसरे समूह को वही या मिलते-जुलते निर्देश देंगे।

धीरे-धीरे निर्देश को जटिल बनाइए। उदाहरण :
'दोनों हाथों से अपना सिर छुओ, फिर दाहिने हाथ से दाहिना कान छुओ।'
'दोनों आंखें मींचो, अपने पड़ोसी को छुओ, उससे कहो कि अपना बांया हाथ तुम्हें दे।'

जब एक समूह के बच्चे दूसरे समूह को निर्देश दे रहे हों तो यह जरूरी नहीं कि वे अध्यापक के निर्देशों को ज्यों का त्यों दुहराएं। उन्हें ताजे निर्देश रचने के लिए प्रोत्साहित कीजिए।

पांच

तुलना

एक जैसी दिखने वाली चीजों के जोड़े बनाइए, जैसे दो पेड़ों की पत्तियां, अलग-अलग पौधों के फूल, पत्थर, अलग-अलग आकार में काटे गए कागज के टुकड़े।

बच्चों को बताइए कि आप जोड़े की एक चीज का वर्णन करेंगे और वर्णन ध्यान से सुन कर उन्हें यह अनुमान लगाना है कि आप किस चीज की चर्चा कर रहे थे। उदाहरण : 'मैं जिस पत्ती के बारे में सोच रहा हूं, वह लम्बी और चिकनी है और उसकी किनार सीधी है।'

यह गतिविधि आठ-दस बार करने के बाद वर्णन करने का काम बच्चों को सौंप दीजिए। हर बार यह गतिविधि करते वक्त चीजें, बदल दीजिए। हर बार वर्णन के लिए और बारीक बातें चुनिए।

छः

यह कैसे बनाया?

बच्चों को कागज़, कपड़े, या अन्य उपलब्ध सामग्री से चीज़ें बनाना सिखाइए। कागज़ की नाव, हाथ की कठपुतली, और धागे की आकृतियां बढ़िया रहेंगी। इन्हें बनाने का प्रदर्शन करते समय खूब विस्तार से विवरण देते जाइए और बच्चों को कहिए कि वे साथ-साथ खुद भी वही चीज़ बनाते जाएं। जैसे यदि आप कागज़ की नाव बना रहे हैं तो एक-एक कदम स्पष्ट करते जाइए—'कागज़ को आधा मोड़ो। अब कोनों को अन्दर की तरफ मोड़ दो। बची हुई कागज़ की पट्टी को उठा दो'।

बच्चे जब चीज़ बनाना सीख जाएं तो उनसे बनाने की पूरी प्रक्रिया बताने को कहिए। अगली बार टोलियों में अलग-अलग चीज़ें बनाने को दीजिए और हरेक टोली से कहिए कि वह दूसरों को समझाए कि अमुक चीज़ कैसे बनाई है।

सात

करके दिखाना

पहला चरण : ऐसे दस-पन्द्रह क्रियाकलाप चुन लीजिए जिन्हें बच्चे रोज़ देखते हों। उदाहरण झाड़ू लगाना, केला छीलना, बर्तन मांजना, सब्जी काटना, दो भरी बाल्टियां उठा कर चलना। हर बच्चे के कान में फुसफुसा दीजिए कि आपने उसके लिए कौन-सा काम चुना है। हर बच्चा बारी से सामने आए और चुपचाप अपना काम करके दिखाए। बाकी को यह अनुमान लगाना है कि उसने क्या करके दिखाया।

दूसरा चरण : इस गतिविधि को थोड़ा जटिल बनाइए। ऐसे क्रियाकलाप चुनिए जिनमें पांच-सात बच्चों की ज़रूरत हो। बच्चों की टोलियां बना दीजिए और प्रत्येक टोली को एक सामूहिक अभिनय करने को दीजिए। बड़े बच्चों के साथ यह गतिविधि करते वक्त कागज़ के टुकड़ों पर लिख दीजिए कि उन्हें क्या करना है।

आठ

तस्वीर की छानबीन

पांच-पांच बच्चों की टोलियां बनाइए और हर टोली को एक चित्र दे दीजिए। यह गतिविधि शुरू करने से पहले आप को सारे चित्रों का ध्यान से अध्ययन कर लेना चाहिए और पृष्ठ 12 पर सुझाए गए सभी स्तरों के प्रश्न तैयार कर लेने चाहिए। इस तरह हरेक टोली के लिए पांच प्रश्न आपके पास होंगे।

तस्वीर का विश्लेषण करने और आपस में चर्चा करने के लिए कम से कम पांच मिनट बच्चों को दीजिए। टोली के सदस्यों को एक से पांच की क्रमसंख्या में रख दीजिए और इस क्रम से पांचों प्रश्न पूछिए।

ये प्रश्न बच्चों से अलग-अलग, अनौपचारिक बातचीत के लिए भी उपयोगी हैं। इस गतिविधि को दो-चार बार आयोजित करने के बाद आप नए-नए प्रश्न आसानी से बना सकेंगे, लेकिन शुरू में पहले से पूरी तैयारी करके रखना ही ठीक रहेगा।

नौ

सही तस्वीर कौन सी है?

यह गतिविधि तभी की जा सकती है जब आपके पास बाल साहित्य की कई किताबें—खास तौर से चित्रों वाली किताबें—हों (देखिए परिशिष्ट)।

बच्चों के जोड़े बना दीजिए। वे आमने-सामने दो पंक्तियों में बैठें। एक पंक्ति के बच्चे किताबों को उलट-पुलट कर कोई एक तस्वीर चुन लें। अब इस पंक्ति का हर बच्चा अपने सामने बैठे बच्चे को तस्वीर दिखाए बिना तस्वीर का विवरण देगा। विवरण देकर किताब बंद करके वह सामने वाले बच्चे को दे देगा और अब इस बच्चे को सुने हुए विवरण के आधार पर तस्वीर ढूंढनी होगी।

दोनो पंक्तियां किताबों की अदला-बदली करती रहें। यह गतिविधि दीवार पर टंगे चित्रों की मदद से भी की जा सकती है।

दस

कहानी बनाना

बोतलों और डिब्बों के ढक्कन, कपड़े के टुकड़े, चूड़ी के टुकड़े, छोटे-छोटे पत्थर, पत्तियां, निबें, और इस तरह की तमाम चीजें इकट्ठी कर लीजिये। पांच-पांच या छः चीजों की ढेरियां बना कर पांच-पांच की हरेक टोली को एक ढेरी दे दीजिए। हर टोली को एक जगह बैठ कर चीजों पर चर्चा करनी है और लगभग पन्द्रह-बीस मिनट में एक कहानी गढ़नी है। सारी टोलियों के लौटने पर हर टोली में से एक बच्चा कहानी सुनाएगा। यदि टोली के अन्य सदस्य कोई फेरबदल करना चाहें, तो उन्हें खुशी से ऐसा करने दीजिए।

इस गतिविधि की सफलता इस बात पर निर्भर है कि आपके बच्चों को कहानियां सुनाने का कितना अनुभव है? साथ ही यह इस बात पर भी निर्भर है कि क्या वे किसी भी घटना को कहानी की तरह सुना सकते हैं? कोई भी घटना या वस्तु एक दिलचस्प कहानी की बुनियाद बन सकती है। यदि आप कल्पना और सूझबूझ से काम लेंगे तो यह आदत शीघ्र ही आपके बच्चों में भी पड़ जाएगी।

ग्यारह

तुम कहां रहते हो?

बच्चे दो पंक्तियों में आमने-सामने बैठते हैं। एक पंक्ति 'बताने वालों' की है, दूसरी 'सुनने वालों' की। पहली पंक्ति में बैठे हर बच्चे को अपने सामने बैठे बच्चे को समझाना है कि वह अपने घर कैसे जाता है। रास्ते को अच्छी तरह समझने के लिए सुनने वाला कितने ही सवाल पूछ सकता है। उदाहरण :

बताने वाला : 'सीधे जाकर मुड़ जाओ।'
सुनने वाला : 'कितनी दूर तक सीधे जाना है?'
बताने वाला : 'कूड़े के ढेर तक। वहां से मुड़ना है।'
सुनने वाला : 'दाहिने मुड़ना है कि बाएं।'
बताने वाला : 'दाहिने....नहीं, नहीं, बाएं।'

जब सभी बताने वालों की बारी आ चुके तब सुनने वाले बताने वाले बन जाएं और खेल फिर शुरू।

इस सबसे क्या होगा?

यहां दी गई सभी गतिविधियों का लक्ष्य यह है कि अपने आसपास की दुनिया से सम्बन्ध स्थापित करने की बच्चे की क्षमता का विकास हो। यद्यपि इन गतिविधियों का केन्द्र बातचीत है, दरअसल बच्चों के विकास की दृष्टि से उनका सन्दर्भ बहुत व्यापक है। इस व्यापक सन्दर्भ में ये चीजें शामिल हैं:

- सीमित जानकारी के आधार पर होशियारी से अनुमान लगाना
- चीजों से एक से अधिक स्तर पर सम्बन्ध स्थापित करना
- मौलिक व्याख्या करना
- नई जानकारी पाने के लिए प्रश्न पूछना

कुछ गतिविधियां ऐसी हैं जो एक से अधिक माध्यम में काम करने का मौका देती हैं—एक माध्यम शब्दों का और दूसरा चित्रों का। यह सम्भावना अमूर्त और मूर्त प्रतीकों को जोड़ने की सामर्थ्य का विकास करने में सहायक हो सकती है। एक पाठक के रूप में बच्चे के विकास में यह महत्वपूर्ण योगदान होगा।

इन गतिविधियों और इनसे प्रेरित उन तमाम सम्भावनाओं को, जिन्हें आप स्वयं रचेंगें, अगले दो अध्यायों में दी गई गतिविधियों से जोड़ने के कई उपयुक्त बिन्दु आपको आसानी से नज़र आएंगे। पढ़ने और लिखने की क्षमताएं, जो अगले दो अध्यायों का विषय हैं, बच्चे के भाषायी भंडार को कितना ही बढ़ाती हों, बातचीत हमेशा दुनिया से रिश्ता जोड़ने का बुनियादी माध्यम रहेगी। अतः बच्चे जब पढ़ना-लिखना सीख लें, तब भी बातचीत पर आधारित गतिविधियां जारी रहनी चाहिए।

अध्याय-3

पढ़ना

छोटे बच्चों के अध्यापक को जो तमाम चुनौतियां झेलनी पड़ती हैं, पढ़ना सिखाना शायद उनमें सबसे कठिन और सबसे स्फूर्तिवान चुनौती है। वह सबसे कठिन इसलिए है क्योंकि पढ़ना एक सादा कौशल नहीं है। उसमें कई कौशल और बोध-क्षमताएं शामिल हैं। पढ़ना सिखाने की कोई एक अचूक विधि नहीं है। हर विधि की अपनी सीमाएं हैं और अध्यापक को यह कोई नहीं सुझा सकता कि उसकी परिस्थिति में सही उपाय क्या है। फिर भी, पढ़ने का शिक्षण एक स्फूर्तिवान काम है क्योंकि बच्चे के जीवन का बहुत कुछ उस पर निर्भर है। यदि एक बार आप बच्चे को पढ़ने और पुस्तकों से सफलतापूर्वक जोड़ सकें तो फिर उसके लिए सम्भावित उपलब्धियों का कोई अंत नहीं है।

तो असली बात यह है कि पढ़ने का शिक्षण 'सफलतापूर्वक' कैसे किया जाए? यहां हमे दो क्षण रुक कर अपने इर्द गिर्द फैली भीषण विफलता पर विचार करना चाहिए। लाखों बच्चे हर साल पढ़ना सीखते हैं, लेकिन, इनमें से बहुतेरे पढ़ने का टिकाऊ कौशल प्राप्त नहीं कर पाते। बहुत से स्कल की परीक्षा पास कर लेते हैं, लेकिन पढ़ने में रुचि का विकास नहीं कर पाते कई बच्चे आराम-से पढ़ते दिखते हैं, पर वास्तव में पढ़े हुए को ज़्यादा समझ नहीं पाते। काफ़ी हद तक विफलताओं का दोष हम पढ़ने के दरिद्र शिक्षण को दे सकते हैं।

पढ़ने का स्वस्थ कौशल बच्चे के समग्र विकास में क्या भूमिका निभाता है, यह किसी अध्यापक को याद दिलाने की ज़रूरत नहीं। लेकिन ऐसा लगता है कि बहुत कम अध्यापक यह जानते हैं कि 'पढ़ने का स्वस्थ कौशल' किसे कहेंगे और उसका विकास कैसे किया जा सकता है? इस अध्याय में 'पढ़ने का स्वस्थ कौशल' हम उन कौशलों के समूह को मानेंगे जो **लिखी या छपी भाषा को अर्थ से जोड़ने में** बच्चे की मदद करते हैं। जब तक एक बच्चा पढ़ी हुई सामग्री को समझने या **पहले से ज्ञात किसी चीज़ से जोड़ने** में असमर्थ रहता है तब तक हम उसकी पढ़ने की क्षमता को स्वस्थ नहीं कह सकते। अतः, इस पुस्तक के सन्दर्भ में, पढ़ने की परिभाषा हम 'लिखे हुए शब्दों में अर्थ ढूंढने की प्रक्रिया' के रूप में करेंगे।

स्थिति फ़िलहाल यह है

यदि हम यह परिभाषा मंजूर कर लें तो जल्दी ही यह देख सकेंगे कि आंगनबाड़ियों (या किंडरगार्टनों) और प्राइमरी स्कूलों में हो रही अनेक चीज़ें उचित नहीं हैं। उदाहरण के लिए वर्णमाला को रटना या कहानी को शब्दशः ज़ोर से दुहराना हमारी परिभाषा के हिसाब से संतोषप्रद गतिविधियां नहीं है। ऐसा करते समय बच्चे लिखित भाषा को किसी अर्थ से नहीं जोड़ पाते। वर्णमाला के अक्षरों का अलग से कोई अर्थ नहीं होता। कई स्कूलों में अक्षरों को 'कमल' और खरगोश' जैसे रूढ़ शब्दों से इस तरह बांध दिया जाता है कि फिर बच्चे इन अक्षरों को किसी भी शब्द में पाकर 'कमल' का 'क' कह कर पहचान पाते हैं। यदि कहानी हरेक शब्द को तोड़ कर पढ़ी जाए तो उसका कोई खास अर्थ नहीं निकलेगा—इस तरह कहानी से सम्बन्ध बनाना भी सम्भव नहीं है।

कुछ लोग यह दलील दे सकते हैं कि ये गतिविधियां भले तत्काल सार्थक न हों पर आगे चल कर अर्थग्रहण के साथ पढ़ने की बुनियाद बन सकती हैं। शायद इस दलील में थोड़ी-बहुत सच्चाई हो, पर यह सच्चाई तभी लागू हो सकती है जब सारे बच्चे स्कूल में इतने वर्ष टिकें कि वे सार्थक रूप से पढ़ना सीख लेने का अवसर पा सकें। उन बच्चों के बारे में भी सोचना ज़रूरी है जो एक ध्वनि को दर्जनों बार दुहराने, अक्षर की नकल उतारने, शब्दों को अलग करके जोर-जोर से बोलने की कवायद से बुरी तरह निराश और कुंठित हो जाते हैं। हम सब जानते हैं कि बच्चों को ऐसी गतिविधियां भाती हैं, जिनका फल तुरंत मिलता हो। बहुत आगे चल कर लाभ मिलने की उम्मीद थोड़े ही बच्चों को प्रेरित कर सकती है। और कई बच्चों के लिए तो भविष्य स्कूल में रहने की भी गारंटी नहीं देता। तमाम अन्य कारणों के साथ-साथ शुरू से मिली विफलता और निराशा स्कूल से इन बच्चे को विदा कर देती है।

अतः हमें इस बुनियादी सवाल का सामना करना ही पड़ेगा कि 'पढ़ने की आरंभिक शिक्षा को सार्थक कैसे बनाएं?' आगे के पृष्ठों में अध्यापकों के करने लायक कुछ चीज़ें सुझाई गई हैं। जो लोग पुरानी विधियों के आदी हैं, उन्हें ये चीज़ें एकदम चकरा देने वाली या असम्भव लग सकती हैं। पर यदि पुरानी विधियां ठीक-ठाक होतीं तो हमें नई विधियों की जरूरत ही न पड़ती। हमें न केवल नई विधियों की बल्कि सम्पूर्णतः नए परिप्रेक्ष्य की ज़रूरत इसलिए है क्योंकि पुरानी विधियां ठीक से काम नहीं दे रही हैं।

शुरुआत किताबों से

'फ्लैश कार्ड', चार्ट या लकड़ी के अक्षरों जैसी प्रचलित सामग्री की तुलना में पढ़ने की शुरुआत किताबों से करना कहीं अच्छा और ज़रूरी है। हमारा उद्देश्य तो आखिर यही है न कि बच्चे आगे चल कर किताबें पढ़ सकें! चार्टों और कार्डों जैसी चीज़ें कभी-कभी काम आ सकती हैं पर वे पढ़ना सीखने की वैसी तेज़ और स्थायी इच्छा पैदा नहीं कर सकतीं जैसी किताबें कर सकती हैं। न ही उन्हें पढ़ कर बच्चे को अपनी उपलब्धि का वैसा आभास मिल सकता है जैसा कोई किताब दे सकती है। लेकिन पहले हमें यह स्पष्ट समझ लेना चाहिए कि हम किस तरह की किताबों की चर्चा कर रहे हैं और उन्हें किस तरह इस्तेमाल करना है?

पढ़ना सिखाने के लिये उपयोगी पुस्तकें वही हैं जिनकी चर्चा पिछले अध्याय में 'बात' के अंतर्गत हो चकी है। इस तरह की किताबों की एक सूची परिशिष्ट-एक में दी गई है। यदि आप बाल-साहित्य की ये 20 किताबें खरीद सकें तो आप अपने बच्चों को एक नए ढंग से पढ़ना सिखाने की शुरुआत कर सकते हैं। इन 20 के अलावा कई किताबें आप खुद बना सकते हैं। साफ़ अक्षरों में हाथ से लिखी और रेखाचित्रों या तस्वीरों (जिन्हें बच्चे बना सकते हैं) से सजाई गई कोई भी कहानी आपके संग्रह में स्थायी रूप से शामिल हो सकती है। इसी तरह आप कविताओं, गीतों और बच्चों के अपने खेलगीतों के संग्रह बना सकते हैं।

किताब पढ़ कर सुनाना

इस बात का हमेशा ध्यान रखिए कि बच्चे दस से ज़्यादा न हों और फर्श पर आपके गिर्द बैठे हों। बाकी बच्चों को इस वक्त कोई अन्य काम देना ज़रूरी है। आपके गिर्द बैठे बच्चों में से हरेक को किताब के पन्ने आसानी से नज़र आने चाहिए। किताब में जो लिखा है उसे पढ़ते वक्त आप उसमें अपना पुट अवश्य देते जाइए। कुछ किताबों में कहानी या कोई सामग्री खूब विस्तार से प्रस्तुत की गई होती है। एक लंबी कहानी को ज्यों का त्यों पढ़ देने से काम नहीं चलेगा। कहानी आपको इतनी अच्छी तरह आनी चाहिए कि आप उसे छोटा करके अपने शब्दों मे सुना सकें। इसके विपरीत यदि हर पृष्ठ पर एक या दो पंक्तियां ही लिखी हैं तो आप कुछ विवरण जोड़ सकते हैं। यह भी आवश्यक है कि आप चित्र में दिए गए विवरण बच्चों को दिखाइए ओर उन पर इत्मीनान से बात कीजिए।

'पढ़ना' क्या है?

जो लोग पढ़ नहीं सकते उनके लिए पढ़ना एक रहस्य है। बीस साल पहले विशेषज्ञों को भी यह नहीं मालूम था कि जब बच्चा पढ़ना सीखता है तो वह दरअसल करता क्या है? अपने अनुभव और परम्परा के आधार पर अध्यापकों ने कुछ 'विधियां' खोज रखी थीं, जैसे 'वर्णमाला' विधि, 'उच्चारण' विधि, 'शब्द' विधि आदि। इन विधियों को उस ग्राफिक इकाई के नाम से जाना जाता था जो बच्चों को दी जाने वाली आरम्भिक सामग्री के लिए प्रयोग की जाती थी। इनमें से कोई 'विधि' पढ़ने की प्रक्रिया की जानकारी पर आधारित नहीं थी। फिर भी ये 'विधियां' आज तक लोकप्रिय बनी हुई हैं।

अब यह माना जाता है कि पढ़ने की प्रक्रिया में अंकित सूचना की बानगी ग्रहण करना महत्वपूर्ण है। हमारी आंखें जब अक्षरों, विराम चिन्हों, शब्दों और शब्दों के बीच छोड़ी गई जगहों का मुआयना करती हैं तो हमारा मस्तिष्क इस ग्राफिक सामग्री की संपूर्ण मात्रा पर ध्यान नहीं देता। यदि ऐसा होता तो छोटी-छोटी सूचना पर गौर करने की मस्तिष्क की क्षमता पर अत्यधिक बोझ पड़ता और अधिकांश लोग जिस रफ्तार से पढ़ते हैं वह असम्भव हो जाती। पारम्परिक विधियों से पढ़ना सीखने वाले कई बच्चों के साथ यही होता है। वे हर शब्द को अक्षरों की छोटी इकाइयों में तोड़ते हैं और इस तरह शब्दों का अर्थ ग्रहण करने की मस्तिष्क की क्षमता पर बहुत ज़्यादा बोझ डाल देते हैं। एक प्रवीण पाठक की आंखे ऐसा बोझ नहीं पड़ने देतीं क्योंकि वे पन्ने पर अंकित ग्राफिक सूचनाओं के एक सीमित, चुने हुए अंश से जूझती हैं। प्रवीण पाठक किसी अक्षर के पूरे आकार पर ध्यान नहीं देता है, न ही वह एक शब्द के सारे अक्षरों या एक वाक्य के सारे शब्दों पर ध्यान देता है। पढ़ते समय उसकी आंखें अंकित सामग्री के एक छोटे-से अंश पर गौर करती हैं। शेष भाग वह समझदार अनुमान के जरिए ग्रहण करता है। अनुमान का आधार होता है अक्षरों की आकृतियां, शब्दों, उनके अर्थ उनके संयोजन और सामान्य दुनिया से पाठक का पहले से मौजूद परिचय।

पढ़ना एक एकाकी प्रक्रिया नहीं है, उसमें कई प्रक्रियाएं शामिल हैं। पढ़ते वक्त भाषा के उपयोग से जुड़े तीन तरह के संकेत हमारे ध्यान में आते हैं: 1 -अक्षरों की आकृतियां और उनसे जुड़ी ध्वनियां; 2-वाक्य विन्यास (जैसे विशेषण का संज्ञा से पहले आना); 3-शब्दों के अर्थ। भाषा का इस्तेमाल करते-करते हम इन तीनों तरह के संकेतों से जुड़ी कुछ अपेक्षाओं के आदी हो जाते हैं। ये अपेक्षाएं ही अनुमान या भविष्यवाणी के आधार पर छपी हुई सामग्री का वह अंश पूरा करने में हमारी मदद करती हैं जिसे हमारी तेज़ रफ्तार आंखों ने छोड़ दिया था।

इस तरह किताब पढ़ते वक्त प्रश्न पूछना या किसी दूसरी तरह से परीक्षा लेना ठीक नहीं है। कहानी पूरी हुई तो हुई, अब कोई और गतिविधि शुरू कीजिए। बच्चे स्वयं कुछ कहना या पूछना चाहें तो दूसरी बात है, लेकिन एक अध्यापक के तौर पर आप किताब पढ़ कर सुनाने के अवसरों को प्रश्नों से दूर रखें।

यदि हर बच्चे को हर हफ्ते तीन-बार इस तरह किताब सुनने को मिले तो आप पाएंगे कि बच्चे जल्दी ही आपकी पढ़ी किताबों पर बात करना शुरू कर देंगे। कुछ ही समय में वे चित्रों और कहानी से इतने परिचित हो जाएंगे कि वे आपके पढ़ने का अनुमान लगा सकेंगे। इसी अनुमान के सहारे वे एक दिन

किताब को स्वयं पढ़ सकेंगे। तब तक उन्हें किताब की सारी बातें ज्ञात हो चुकी होंगी और वे इन चीज़ों से तरह-तरह के सम्बन्ध बना चुके होंगे। जब वे किताब को पढ़ेंगे—एक पृष्ठ पर दिए गए सारे शब्द या शब्दों के सारे अक्षर जाने बगैर—तो वे उससे अर्थ के कई स्तरों पर जुड़ सकेंगे।

कविता सुनाना और गाना

यदि आपने पृष्ठ 25 पर दिया छोटा-सा लेख 'पढ़ना क्या है?' पढ़ा है तो आपने यह समझ लिया होगा कि पढ़ने की कुंजी अनुमान लगाने का कौशल है। इस कौशल के विकास में कविता आश्चर्यजनक योगदान कर सकती है। नियमित रूप से कविताएं सुन कर छोटे बच्चे भाषा की बुनियादी संरचनाएं ग्रहण कर लेते हैं। कविता इसके लिए विशेष रूप से उपयोगी इसलिए है क्योंकि उसे याद रखना आसान होता है। कविता याद रखने के लिए छोटे बच्चों को कोई विशेष प्रयास नहीं करना पड़ता। बार—बार सुनने, मज़ा लेने और दुहराने से कविता अपने आप याद हो जाती है।

अध्यापक के लिए महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि अच्छी कविताओं का चुनाव कैसे करे और उन्हें कहां तलाश करे। अधिकांश पाठ्यपुस्तकों में दी गई कविताएं प्रायः बहुत घटिया स्तर की होती हैं और भाषा के विकास की दृष्टि से उनकी उपयोगिता बहुत कम होती है। इसी तरह हिन्दी की मासिक पत्रिकाओं में छपने वाली अधिकांश कविताएं निकृष्ट होती हैं। पाठ्यपुस्तकों और पत्रिकाओं की ज़्यादातर कविताएं उबाऊ और एक सतही अर्थ में आदर्शवादी होती हैं। उनकी वाक्य-रचना और शब्दावली कृत्रिम होती है। उनमें रोजमर्रा की भाषा का पुट नहीं होता। यही कारण है कि वे भाषा सीखने के साधन के रूप में विशेष उपयोगी नहीं होतीं।

बच्चों में पढ़ने के कौशल की नींव डालने के लिए एकदम अलग किस्म की कविताएं चाहिए।ऐसी कुछ कविताएं अगले तीन पृष्ठों पर दी गई हैं। निश्चय ही अध्यापक स्वयं ऐसी अन्य कविताएं तलाश सकते हैं पर इसके लिए उन्हें काफी मेहनत करनी होगी। भाषा केस्वाभाविक और खेल जैसे प्रयोग के लिए अपनी दृष्टि दौड़ानी होगी। महज नैतिक सीख देने वाली कविताओं से दूर रहना होगा।

एक काम कोई भी अध्यापक आसानी से कर सकता है— यह है बच्चों के उन गीतों को लिख कर रखना जिन्हें वे कूदते, फांदते, रस्सी कूदते और गेंद से खेलते समय गाते हैं। ये खेलगीत पारम्परिक हैं और इन्हें शहर में ढूंढना कुछ कठिन होगा, पर थोड़ा प्रयास करके हम ऐसे गीतों का संग्रह तैयार कर सकते हैं। संग्रह एक या कई छोटी किताबों की शक्ल ले सकता है जिनमें हर पृष्ठ पर एक गीत सुन्दर अक्षरों में लिखा हो और साथ में हाथ से बनाई या पत्रिका से काटी गई कोई तस्वीर हो। यह जरूरी नहीं कि तस्वीर गीत में कही गई बात को हू-ब-हू पेश करती हो। इतना काफी है कि तस्वीर में गीत का भाव या उससे किसी प्रकार जुड़ा दृश्य प्रकट होता हो। आप इस तरह की कई पुस्तकें तैयार कर सकते हैं। लगभग 16 पेज की ये पुस्तकें सादे कागज से बन सकती हैं। यदि आप खर्चा उठा सकें तो ड्राइंग के कागज से बनी किताब ज्यादा चलेगी और आपको हर साल वही किताब नहीं बनानी पड़ेगी।

कविता की किताब पढ़ने का ढंग वही है जो अन्य किताबें पढ़ने का है— यानी बच्चों को अपने चारों और बैठायें और किताब को बीच में रखें। दो-तीन बार पढ़ने के बाद आप किताब के बगैर कविता गाकर सुनाएं और बच्चे आपके साथ गाएं। यदि कविता अच्छे स्तर की हुई तो वे जल्दी ही उसे याद करके गा सकेंगे। बाद में जब वे उसे किताब से पढ़ेंगे तो शब्दों का आसानी से अनुमान लगा सकेंगे। छः वर्ष के बच्चे एक पूरी कविता कागज या स्लेट पर मज़े से उतार सकते हैं, और अगर तब तक वह उन्हें याद हो चुकी हो तो कुछ ही दिनों में कविता के शब्द पहचानने में कोई खास कठिनाई नहीं होगी।

1

ईलम डील खेलो
आओ खेलो ईलम डील।
गेंद जो उछली ले के
भाग गई चील।
रस्ते में पड़ी एक
बहुत बड़ी झील।

जिसके बीचों बीच में थी
ऊंची - सी कील।
चील ज्यों ही बैठी उस पर
टूट गई कील।

औंधे मुंह पानी में
जाके गिरी चील।
गेंद रही तैरती औ
डूब गई चील।

ईलम डील खेलो आओ
खेलो ईलम डील।

2

बहुत जुकाम हुआ नन्दू को
एक रोज़ वह इतना छींका
इतना छींका इतना छींका
इतना छींका इतना छींका
सब पत्ते गिर गए पेड़ के
धोखा हुआ उन्हें आंधी का

3

नारंगी रंग की नारंगी
बेच रहा फलवाला गाकर
और बजाता है सारंगी

चमक रहा है छिलका पीला
सुन्दर फल है बड़ा रसीला
प्यास बुझे मन खुश हो जाता
ढीली तबियत होती चंगी

4

कितनी लंबी है सड़क
कितना ऊंचा है पहाड़
कितनी छोटी है चिड़िया
पेड़ है कितना बड़ा

तेज़ कितनी है नदी
पत्थर कितना गोल है
घास है कितनी हरी
फूल कितना लाल है

5

लड़कों इस झाड़ी के भीतर
छिपा हुआ है जोड़ा तीतर
फिरते थे यह अभी यहीं पर
चारा चुगते हुए जमीं पर

एक तीतरी है इक तीतर
हमें देख कर भागे भीतर
आओ इनको जरा डरा कर
ढेला मार निकालें बाहर

यह देखो वह दोनों भागे
खड़े रहो चुप बढ़ो न आगे

अब सुन लो इनकी गिटकारी
एक अनोखे ढंग की प्यारी
तीइत्तड़ तीइत्तड़ तीइत्तड़ तीइत्तड़
नाम इसी से इनका तीतर

रचयिता:
1 निरंकार देव सेवक
2 राम नरेश त्रिपाठी
3 सुधा चौहान
4 कृष्ण कुमार
5 श्रीधर पाठक

6
लाल टमाटर लाल टमाटर, मैं तो तुमको खाऊंगा।
अभी न खाओ मैं कुछ दिन में और अधिक पक जाऊँगा

लाल टमाटर लाल टमाटर, मुझको भूख लगी
भूख लगी है तो तुम खा लो यह गाजर मूली सारी।।

लाल टमाटर लाल टमाटर, मुझको तो तुम भाते हो।
तुमको जो अच्छा लगता है उसको तुम क्यों खाते हो।।

लाल टमाटर लाल टमाटर, अच्छा तुम्हें न खाऊंगा।
मगर तोड़ कर डाली पर से अपने घर ले जाऊंगा।।

7
एक, दो तीन चार।
आओ चलें कुतुब मीनार।
पांच, छः, सात आठ
देखें चल के राजघाट
नौ, दस, ग्यारा बारा
चलें चांदनी चौक फव्वारा।
तेरा, चौदा पन्द्रा, सोला
कनाट प्लेस में मुर्गा बोला।।

8
आओ एक बनाएं चक्कर
फिर उस चक्कर में इक चक्कर
फिर उस चक्कर में इक चक्कर
फिर उस चक्कर में इक चक्कर
और बनाते जाएं जब तक
ऊब न जाएं थक कर

दौड़–दौड़ कर सभी थकें
हम बैठें मारे मक्कर,
नींद लगे हम सो जाएं
ये देखें उझक-उझक कर।

आओ एक बनाएं चक्कर।

फिर सब से छोटे चक्कर में
म्याऊं एक बिठाएं
और बाहरी हर चक्कर में
चूहों को दौड़ाएं।

9
कितनी बड़ी दीखती होंगी मक्खी को चीजें छोटी
सागर सा प्याला भर जल, पर्वत-सी एक कौर रोटी।

खिला फूल गुलदस्ते जैसा कांटा भारी भाला-सा
तालों का सूराख उसे होगा बैरगिया नाला-सा

हरे भरे मैदान की तरह होगा एक पीपल का पात
पेड़ो के समूह-सा होगा बचा खुचा थाली का भात।

ओस बूंद दरपन-सी होगी सरसों होगी बेल समान
सांस मनुज की आंधी-सी करती होगी उसको हैरान।

10
गोलू के मामा आए
सब देख रहे मुंह बाए
मुंह उनका है गुब्बारा
था किसने उन्हें पुकारा,
नारंगी उनको भाए
गोलू के मामा आए।

वे पूरब से हैं आते
गोलू से गप्प लड़ाते
हौले से उसे सुला कर
फिर पच्छिम को उड़ जाते।
सच बात अगर मैं बोलूं
तो पोल पुरानी खोलूं,
सूरज का फटा पजामा
सिलते गोलू के मामा।

पर जाने क्या जादू है
रहते हैं सब पर छाए,
सब देख रहे मुंह बाए
गोलू के मामा आए

ये बड़े दिनों में आये
झोले में हैं कुछ लाए
हमको तो पता चले तब
जब गोलू हमें खिलाए।

लो दिखा-दिखा नारंगी
बन जाते एक बताशा,
यूं सबको देते झांसा
करते ये खूब तमाशा।
हर पन्द्रह दिन में कैसे
आ जाते बिना बुलाए
मैं देख रहा मुंह बाए
गोलू के मामा आए

रचयिता

6 निरंकार देव सेवक
7 सर्वेश्वर दयाल सक्सेना
8 सर्वेश्वर दयाल सक्सेना
9 ठाकुर श्रीनाथ सिंह
10 रमेश चन्द्र शाह

किताबें बनाना

कक्षा में (स्कूल में ही नहीं) किताबें रखना अच्छी बात है पर किताबें 'बनाना' भी जरूरी है। बच्चों को पढ़ना सिखाने के लिए सबसे अच्छी सामग्री अध्यापक ही बना सकता है। यह सामग्री हर बच्चे के लिए अलग से भी बनाई जा सकती है और सामूहिक रूप से भी। इस सामग्री का मुख्य स्रोत वे तमाम गतिविधियां हैं जिनकी चर्चा हम कर चुके हैं, जैसे कहानियां सुनाना व पढ़ना, चित्रों पर चर्चा करना, कविता गाकर सुनाना आदि। कागज कैसा भी हो सकता है। यदि बच्चों के पास कापियां हैं तो उन्हें ही नीचे समझाए गए तरीके से किताबों में बदला जा सकता है। यदि अध्यापक या स्कूल कागज़ खरीदने की स्थिति में हो— सादा भी और ड्राइंग का भी— तो कई और चीजें सम्भव हैं।

शुरुआत पांच वर्ष के आसपास कभी भी हो सकती है। यह याद रखना जरूरी है कि कक्षा के सारे बच्चे कभी एक साथ या एक रफ्तार से पढ़ना शुरू नहीं कर सकते। अन्तर काफी बड़ा हो सकता है। कुछ बच्चों में पांच वर्ष की आयु में ही बहुत रुचि और सामर्थ्य हो सकती है। ये बच्चे सात वर्ष की आयु तक पढ़ने के कौशल अच्छी तरह प्राप्त कर लेंगे। दूसरी ओर कुछ बच्चों को आठ वर्ष की आयु में भी दिक्कत महसूस हो सकती है। इन पृथक रफ्तारों की चिन्ता ऐसे अध्यापक को नहीं सताएगी जो अपने बच्चों को निकट से जानता हो। उसे इतना भर करना होगा कि हर बच्चे की प्रगति पर विचार करे और कुछ बच्चों की विशेष कठिनाइयों का ध्यान रखे। यह एक चुनौती भरा काम है और जहां बच्चों की संख्या अधिक हो, वहां तो यह असम्भव है। वहां केवल सीमित सफलता की उम्मीद की जा सकती है।

कहानियों, कविताओं और तस्वीरों आदि से सम्बन्धित गतिविधियों से उपजी बातचीत से हरेक बच्चे के लिए एक शब्द या वाक्य चुन लीजिए और उसे बच्चे की कापी या एक कागज़ पर साफ-साफ लिख दीजिए। यह जरूरी है कि शब्द या वाक्य उस कहानी या चित्र का प्रतिनिधित्व करता हो जिसके सन्दर्भ में बातचीत हुई थी। तभी उसका बच्चों के लिए कोई तात्कालिक अर्थ होगा। आपने हर बच्चे के लिए जो लिखा है उसे पढ़ कर सुनाएं। फिर बच्चे से कहें कि वह आपकी लिखावट को नीचे उतारे या उसी पर लिखे।*

रोज जब आप बच्चे को एक नया शब्द या वाक्य लिख कर दें तो पिछली सामग्री को जरूर दुहराएं।बच्चे से कहिए कि पिछले शब्दों या वाक्यों को पढ़ कर सुनाए और जब उसे दिक्कत हो तो आप पढ़ कर सुनाइए। साथ ही जब रोज़ नया वाक्य लिखने और पुराने वाक्य सुनने के लिए बच्चे के साथ बैठें तो वाक्यों को थोड़ा विस्तार देकर उन पर बातचीत करना ना भूलें। उदाहरण के लिए यदि एक पिछला वाक्य कुत्ते के बारे में है तो इस तरह के एक-दो प्रश्न और पूछिए कि वह कहां गया था, आज सुबह वह कहां है? आखिरी बात यह है कि बच्चे के पढ़ने में छोटी-छोटी ग़लतियां न निकालिए। यदि वाक्य है 'बारिश आई' और बच्चे ने पढ़ा, 'बारिश हुई' तो इस गलती को ठीक करने की जरूरत नहीं है क्योंकि उससे वाक्य के अर्थ का कोई नुकसान नहीं हुआ।

कक्षा की हर कापी धीरे-धीरे कहानियों या सोच-विचार की एक किताब बन जाएगी। आप जब बच्चे की लिखाई रोज देखेंगे तो पाएंगे कि अलग-अलग अक्षरों में उसे एक बराबर कठिनाई नहीं होती। कुछ अक्षर या चिन्ह ज्यादा अभ्यास मांगते हैं और उनका अभ्यास उसी पृष्ठ पर जितनी बार चाहे किया जा सकता है। लक्ष्य यह है कि जो भी भाषा आप सिखा रहे हैंउसकीवर्णमाला के प्रत्येक अक्षर को लिखने और पहचानने में बच्चा प्रवीण हो जाए।

कुछ लोग सोचते हैं, और शायद उन्होंने आपको बताया भी हो, कि हिन्दी वर्णमाला अंग्रेजी से एकदम भिन्न है। वे कहते हैं कि हिन्दी की मात्राएं अलग से सीखना ज़रूरी है और शुरू में बच्चों को केवल

* लिखने के पहले जरूरी उंगलियों के संचालन का विकास करने के लिए अगला अध्याय, विशेषतः "बात और लेखन के बीच" शीर्षक खंड देखें।

ऐसे थोड़े-से शब्द दिए जाने चाहिए जिनमें कोई मात्रा नहीं लगती। यह दृष्टिकोण एक मान्यता पर आधारित है और यह कतई जरूरी नहीं कि हर अध्यापक इस मान्यता से सहमत हो। इस मान्यता के कारण प्रवेशिकाओं के लेखक मात्राओं से परहेज़ करते हुए प्रायः बड़ी अजीबोगरीब रचना कर बैठते हैं। उदाहरण के तौर पर ये दो वाक्य, जिनमें अर्थ की तलाश करना व्यर्थ है, हिन्दी की प्रवेशिकाओं में बहुत लोकप्रिय रहे हैं:

थप रतन। घर थप। घर थप रतन।

मगर इधर मत रख। खबर उधर मत रख।

इस बात का कोई आधार नहीं है कि छोटे बच्चों को मात्राओं से दूर रखा जाए। पढ़ने की सार्थक सामग्री में मात्राएं हों तो इसका बच्चों की प्रगति पर कोई बुरा असर नहीं पड़ेगा। हां, मात्राओं को लिखने या आगे चल कर लेखन में मात्राओं के इस्तेमाल का विशेष अभ्यास कराना दूसरी बात है।

कुछ गतिविधियां

फिर से कहना जरूरी है कि ये गतिविधियां सुझाव मात्र हैं। पढ़ना सीखने की प्रक्रिया को मजेदार बनाने के लिए आप क्या-क्या चीजें कर सकते हैं, इसकी ओर संकेत करने के लिए ये गतिविधियां यहां दी गई हैं। इनकी उपयोगिता बच्चों की प्रगति के भिन्न-भिन्न स्तरों के हिसाब से आपको तय करनी होगी। उनमें थोड़ा-सा परिवर्तन करके उन्हें किसी भी आयु या क्षमता के अनुरूप बनाया जा सकता है।

एक
फर्श पर नक्शा

अगर आपकी कक्षा में फर्नीचर नहीं है तो अच्छा है, नहीं तो बच्चों को बरामदे, पिछवाड़े या किसी और खुली जगह में ले जाइए जहां वे आसानी से घूम-फिर सकें।

दौड़ने, चलने, एक पैर से कूदने, एक कदम छोड़ कर कूदने, घोड़े की तरह कूदने, लम्बे डग भरने, आधे कदम लेने, उल्टे चलने, और बगल चाल के लिए अलग-अलग प्रतीक चुन लीजिए। ध्यान रखें कि प्रतीक बहुत सरल हों और आसानी से याद किए जा सकें। जैसे दौड़ने के लिए:--------→एक कदम छोड़ कर कूदने के लिए:

अब जिस जगह आप यह गतिविधि कर रहे हैं उसके हर कोने के लिए प्रतीक नियत कर दीजिए। बच्चों को समझा दीजिए कि किस प्रतीक का क्या अर्थ है। पहली बार यह गतिविधि करते वक्त तीन या चार से ज्यादा प्रतीक न लीजिए, वरना बच्चे कुछ दिक्कत महसूस करेंगे।

शुरू करने के लिए कोई सा कोना चुन लीजिए। बच्चों को बताइए कि उस कोने में पहुंचकर उन्हें फर्श पर बने प्रतीक के अनुसार काम करना है। जैसे, यदि फर्श पर तीर का निशान बना है तो उन्हें दौड़ने लगना है, और फिर अगले कोने में पहुंच कर वहां बने प्रतीक के अनुसार काम करना है। प्रतीक मिट्टी में हाथ से बनाए जा सकते हैं या वहां गत्ते या पत्थर का टुकड़ा रखकर रंग से बनाए जा सकते हैं।

अब हर बच्चे को तीन-चार बार भाग लेने का मौका मिल चुका हो तब प्रतीक की जगह उस गतिविधि का नाम साफ अक्षरों में लिख दीजिए जो प्रतीक में दर्शाई गई थी। जैसे तीर मिटाकर लिख दीजिए—'दौड़ो'। इसके बाद गतिविधि पहले की तरह चालू रखिए।

धीरे-धीरे प्रतीकों की संख्या बढ़ाते जाइये। कक्षा में वापस आकर बाहर की जगह का नक्शा ब्लैकबोर्ड पर बनाइए और उसमें सही जगहों पर गतिविधियों के नाम लिखिए।

दो
वर्णमाला के टुकड़े

वर्णमाला को तीन भागों में बांटिए और हर भाग के अक्षर बड़े आकार में कागज़ की एक लम्बी पट्टी पर लिख दीजिए। तीनों भागों को दीवार पर कुछ-कुछ दूर पर चिपका दीजिए— ऐसी जगह जहां वह सब बच्चों को साफ व आसानी से दिखाई दे। मात्राओं को एक चौथी पट्टी पर लिखिए।

अब बोर्ड पर एक शब्द लिखिए। बच्चों से कहिए कि उस शब्द के अक्षर और मात्राएं ध्यान से देख कर उन्हें दीवार पर चिपकी पट्टियों में पहचानें।

तीन
विज्ञान की शुरुआत

रोजमर्रा की चीजों की चर्चा के लिए उनका वर्गीकरण कीजिए। उदाहरण: 'उड़ने वाली चीजें,' 'गोल चीजें, 'चपटी चीजें' और 'तैरने वाली चीजें'।

इस तरह बनाए गए किसी एक समूह का नाम बोर्ड पर लिखिए, फिर उसे पढ़ कर सुनाइए और बच्चों से कहिए कि वे उस समूह में शामिल की जा सकने वाली तीन चीजों के नाम सुझाएं। जैसे, 'उड़ने वाली चीजों' में बच्चे पतंग, हवाई जहाज और बादल सुझा सकते हैं। इन्हें बोर्ड पर साफ-साफ लिखिए।

बच्चों से कहिए कि चीजों के नाम अपनी कापी पर उतारें और हर चीज का एक छोटा-सा चित्र भी बनाएं।

चार
शब्दों का नागिन टापू

जमीन पर एक या कई नागिन टापू के खेल जैसे चौखाने बनाइए। हरेक घर में रोज़मर्रा की चीजों जैसे गिलास, चम्मच, घर, पेड़ के नाम लिख दीजिए और साथ में उस चीज का एक छोटा-सा प्रतीक बना दीजिए।

बच्चों को पांच-पांच के समूह में बांट कर हर समूह में एक रैफरी नियुक्त कर दीजिए। रैफरी का काम है गप्पी फेंकना और हर बच्चे की चाल का निरीक्षण करना। खेलने वालों को हर घर में पैर रखते समय उस पर लिखी चीज का नाम पढ़ कर सुनाना है और गप्पी वाले घर के ऊपर से गुज़र जाना है।

यह खेल खिलाते वक्त रैफरी का काम हर बार किसी नए बच्चे को दीजिए।

पांच

जो पढ़ा वह करो

जो बच्चे सीख चुके हैं उन्हें यह भी सीखना जरूरी है कि पढ़ने का सम्बन्ध करने से है। इस गतिविधि में अध्यापक बोर्ड के पास चुपचाप खड़ा रहता है और बोलने के स्थान पर छोटे-छोटे निर्देश बोर्ड पर लिखता जाता है।

हरेक बच्चे को उसकी क्रमसंख्या पता होनी चाहिए। बोर्ड पर निर्देश लिखते समय साथ में किसी बच्चे की क्रमसंख्या भी लिख दें। जैसे– 'उठकर बाहर जाओ, एक पत्थर लाओ-10'। इस निर्देश का मतलब है कि 10 नम्बर के बच्चे को उठ कर बाहर जाना है और एक पत्थर लाना है। अब अगला निर्देश हो सकता है- 10 नम्बर से पत्थर लेकर उसे अपने दाहिने घुटने पर रखो-5'।

धीरे-धीरे निर्देशों को और जटिल बनाते जाएं। जटिल निर्देश इस तरह के हो सकते हैं कि बच्चा दीवार पर टंगा पोस्टर देख कर कोई खास चीज ढूंढे, या अस्पताल का रास्ता बताएं, या स्कूल के बाहर लगे पेड़ों की संख्या गिन कर बताएं, आदि।

छः

पिछला शब्द, अगला शब्द

इस गतिविधि के लिए बाल साहित्य की किताबें पर्याप्त संख्या में होना जरूरी हैं। किताबें बच्चों में इस तरह बांटिए कि हर बच्चे को कोई ऐसी किताब मिले जिसे वह आसानी से पढ़ सके। बच्चों से कहिए कि वे किताब के किसी भी पन्ने को खोलें और दाहिना पेज देखें। क्या इस पेज के अन्त में पूर्णविराम आता है? यदि हां, तो कोई और पन्ना खोलें।

अब पूरा दाहिना पन्ना चुपचाप पढ़ डालें। अंत तक पहुंच कर रुक जाएं और अगला पन्ना न पलटें।

प्रत्येक बच्चे से पूछिए कि वह अंदाज से बताए कि अगले पृष्ठ का पहला शब्द क्या होगा? जब वह अपना अनुमान बता दे तब उससे पन्ना पलट कर यह देखने के लिए कहिए कि अनुमान सही था कि नहीं? सही अनुमान पर बाकी बच्चे ताली बजाने की परम्परा डाल सकते हैं।

जब सबकी बारी आ चुके और सब बच्चे अगला पन्ना पलट चुके हों तो फिर पहले बच्चे से शुरू कीजिए। इस बार हर बच्चे को याददाश्त के आधार पर यह बताना है कि पिछले पेज का आखिरी शब्द क्या था?

सात
तीन प्रश्न

बच्चों को दो पंक्तियों में आमने-सामने बैठाएं। हर बच्चे को एक किताब देकर उसे कहीं भी खोलने को कहिए। दाहिना पेज पूरा पढ़कर बच्चा अपने सामने बैठे बच्चे को किताब दे दे। अब इस बच्चे को वही पेज पढ़ना है। पढ़ कर वह अपने सामने बैठे बच्चे से, जो पहले ही यह पेज पढ़ चुका है, तीन प्रश्न पूछे।

शुरू-शुरू में बच्चे कुछ पूछने में दिक्कत या झिझक महसूस करें तो उन्हें प्रश्नों के उदाहरण बताइए।

आठ
गड़बड़ कविता

यह बहुत जटिल गतिविधि है, इसकी तैयारी बहुत ध्यान से और काफी पहले से करनी होगी। पर एक बार तैयारी करके आप उसी सामग्री को बार-बार प्रयोग में ला सकते हैं। यह भरोसा रखिए कि इस गतिविधि में अपार आनन्द आता है।

चार-चार पंक्तियों की कई कविताएं चुनिए। कोशिश यह कीजिए कि चारों पंक्तियों की तुक मिलती हो। जितने बच्चे हैं उतनी ही कविताएं चाहिए। अब मान लीजिए कि आप 20 बच्चों में यह गतिविधि करने वाले हैं तो 20 कविताओं की पहली पंक्ति अलग-अलग कागज पर लिख लीजिए। अब हर कागज पर दूसरी पंक्ति किसी और कविता की लिखिए और इसी तरह तीसरी और चौथी पंक्तियां अलग-अलग कविताओं की लिखिए। अन्ततः आपके पास 20 कागज होंगे जिन अलग-अलग कविताओं से ली गई चारों पंक्तियां इस तरह लिखी हुई होंगी[1]:

1 दूध जलेबी रक्खी है
2 तू लगता है बिल्कुल भालू
3 तब मैं खाना खाऊंगा
4 पानी में ही सोती मछली

बच्चे गोल घेरे में बैठेंगे। बच्चों को बताइए कि उनके कागज पर लिखी कविता की पंक्तियां गड्डमड्ड हो गई हैं। हर बच्चे को तीन पंक्तियां ढूंढनी हैं जो उसके कागज पर दी गई पहली पंक्ति से मेल खाती हैं।

पहले बच्चे से कहिए कि वह अपने कागज पर लिखी दूसरी पंक्ति पढ़कर सुनाए। बाकी बच्चे ध्यान से सुनें और सोचें कि क्या यह पंक्ति उनके कागज पर दी गई पहली पंक्ति से मेल खाती है। जिस बच्चे को ऐसा लगे वह अपना हाथ खड़ा करे और पंक्ति मांगे। यदि अध्यापक को लगे कि मांग सही है तो बच्चा यह पंक्ति लिख ले और जिस बच्चे ने यह पंक्ति दी है वह अपने कागज पर यह पंक्ति काट दे। अब अगला बच्चा अपनी दूसरी पंक्ति पढ़े। इस तरह यह क्रम तब तक चलता रहे जब तक हर बच्चे को सही दूसरी पंक्ति नहीं मिल जाती। इसके बाद तीसरी पंक्ति की खोज शुरू हो।

---

[1] उदाहरण में दी गई चारों पंक्तियां निरंकार देव सेवक की कविताओं से ली गई हैं।

नौ

प्रतिक्रिया

चित्र देख कर पैदा होने वाली प्रतिक्रिया के स्तर और इन स्तरों से जुड़े हुए सवाल, जिनकी चर्चा पृष्ठ 12 पर हो चुकी है, कहानियों और कविताओं जैसी साहित्यिक सामग्री पर भी लागू होते हैं।

जब आप बच्चों को कहानियां, पत्रिकाएं या किताबें पढ़ने को दें तो पृष्ठ 12 पर दिए गए नमूनों के आधार पर प्रश्न भी बना लें। जब बच्चे आपकी दी हुई सामग्री पढ़ चुकें तो आप इन प्रश्नों की मदद से बच्चों की प्रतिक्रियाओं पर आधारित एक बहस आयोजित कर सकते हैं। पर हर बार कोई चीज़ पढ़ने के लिए देते समय ऐसा न करें। सम्भवतः हफ्ते में एक दिन ऐसा रखा जा सकता है जब उस हफ्ते में पढ़ी गई सामग्री पर चर्चा हो।

बच्चों की प्रतिक्रियाओं का मूल्यांकन न कीजिए। न ही कभी यह आभास दीजिए कि कोई प्रतिक्रिया गलत थी।हर प्रतिक्रिया अपनी जगह सही है। ऐसी प्रतिक्रिया भी सार्थक हो सकती है जो विषयवस्तु से खींचतान करती हो। प्रतिक्रिया कैसी भी हो, वह पढ़ी हुई सामग्री से सामंजस्य स्थापित करने की चेष्टा दिखाती है। एक ही चीज को बार-बार पढ़ कर बच्चा उस पर हर बार अलग प्रतिक्रिया देना चाहे तो इसकी पूरी छूट रहनी चाहिए।

शुरुआत के बाद

यहां प्रस्तुत गतिविधियों के आधार पर आप कई और नई गतिविधियां और नई सामग्री गढ़ सकते हैं। आप पाएंगे कि जिन बच्चों ने यहां दिए गए तरीकों से पढ़ना सीखा है वे हर तरह की सामग्री में दिलचस्पी लेंगे और उसे समझने की कोशिश करने के योग्य पाएंगे। यहां तक कि अखबार का एक पुराना फटा हुआ टुकड़ा भी एक पहेली की तरह इस्तेमाल किया जा सकता है। उसे छोटे-छोटे टुकड़ों में फाड़ कर और बच्चों से यह कह कर कि इन टुकड़ों में दिए अधूरे वाक्य पढ़ कर सारे टुकड़ों को जोड़ें, आप पुराने अखबार का इस्तेमाल पढ़ने के कौशल का विकास करने के लिए कर सकते हैं। इस कौशल में होशियारी से अनुमान करना, छपे हुए शब्द को अर्थ से जोड़ना और अपने अनुमान का परीक्षण करना शामिल है।

बच्चे के पढ़ना सीख लेने के बाद अध्यापक का काम यह है कि बच्चे को अपने इस नए कौशल का इस्तेमाल विविध उद्देश्यों के लिए करने की प्रेरणा दे। हमारे कई प्राइमरी स्कूलों में पढ़ने के कौशल का प्रयोग विविध उद्देश्यों के लिए करने को प्रोत्साहित नहीं किया जाता। पढ़ने का रिश्ता सिर्फ पाठ्यपुस्तकों और परीक्षा से जुड़ कर रह जाता है। नई जानकारी ढूंढने के लिए पढ़ने, निजी रुचियों के विकास के लिए पढ़ने, और आनन्द की खातिर पढ़ने की ओर ध्यान नहीं दिया जाता। पढ़ना बच्चे के व्यक्तित्व के समग्र विकास का हिस्सा नहीं बन पाता। परिणामस्वरूप बच्चे पढ़ना सीख कर भी पाठक नहीं बन पाते। यह एक बड़ी विफलता है और अध्यापक चाहे तो इसका निवारण कर सकता है।

अध्याय - 4

लिखना

लिखना एक तरह की बातचीत ही है। लिखते वक्त हम किसी से संवाद कर रहे होते हैं, हालांकि प्रायः वह व्यक्ति हमारे सामने नहीं होता। बहुत-सी बातें हम किसी सूचना, विचार या याद को सुरक्षित रखने के लिए लिखते हैं। यदि मैं अपने आज के अनुभव एक डायरी में लिखूं तो मैं इन अनुभवों को किसी और दिन पढ़ने की आशा में सुरक्षित रख सकूंगा।

अध्यापक की हैसियत से हमें बच्चों को लेखन का परिचय बातचीत के एक रूप में देना चाहिए। स्कूल में दाखिला लेने तक बच्चे कई तरह के लोगों से कई तरह के विषयों पर बात करने की सामर्थ्य हासिल कर चुके होते हैं। उनमें 'श्रोता बुद्धि' (यानी किससे क्या बात करनी है, कैसी करनी है?) का बीज पड़ चुका होता है। यह बुद्धि लिखना सीखने के लिए बहुत उपयोगी है पर इसका प्रयोग बच्चों को अब किसी दूर बैठे 'श्रोता' (या पाठक) के लिए करना होगा। कुछ किस्म के 'श्रोता' (जैसे अध्यापक या दूसरे बच्चे या स्वयं) पास में उपस्थित भी हो सकते हैं। यह अध्यापक पर निर्भर है कि बच्चे लिखने को सम्बोधन या किसी से कुछ कहने की तरह ले पाते हैं या नहीं।

यह साफ कर देना जरूरी है कि आज लिखना सिखाने के नाम पर जो कुछ हो रहा है हम उससे किसी एकदम भिन्न चीज़ की चर्चा कर रहे हैं। लाखों बच्चों को लिखना एक यांत्रिक कौशल की तरह सिखाया जा रहा है। शुरू में उनसे अक्षरों की आकृतियों को दर्जनों बार नकल करने के लिए कहा जाता है और अध्यापक उन उतारी हुई आकृतियों को बारीकी से देखता है। इस रीति से पूरी वर्णमाला से निपटने में कई हफ्ते लग जाते हैं। इस लम्बी अवधि में लिखना सीखने का कैसा भी उद्देश्य बच्चों की दृष्टि में नहीं रह जाता। बाद में जब उनसे शब्द लिखने या और कुछ दिनों बाद वाक्य बनाने के लिए कहा जाता है तो वे अध्यापक का मुंह यह जानने के लिए ताकते हैं कि वे लिखें क्या? वे लिखने को अपनी कोई बात कहने के माध्यम के रूप में नहीं ले पाते। वे उसे एक कवायद या कर्मकांड के रूप में देखते हैं जिसे उन्होंने अध्यापक से सीखा है।

अब यदि हम इस स्थिति से हटना चाहते हैं तो हमें लेखन को बात के विस्तार की तरह प्रस्तुत करना होगा। अतः दूसरे अध्याय में 'बात' के अंतर्गत दी गई गतिविधियां लिखने की गतिविधियां आयोजित करने के लिए बहुत उपयोगी होंगी। बातचीत हमें किसी श्रोता के सामने चीजों को व्यवस्थित करके सुनाने का मौका देती है। इसी कारण वह लिखना सिखाने के लिए इतनी उपयोगी है।

बात और लेखन के बीच

बच्चों को लिखना सिखाने की शुरुआत करने के पूर्व यह पक्का कर लीजिए कि वे सब अपनी ज़िन्दगी और आसपास हो रही चीजों के बारे में आत्मविश्वास के साथ बात करने लगे हों। इसका मतलब यह है कि:

1 उनमें अपने अनुभव और विचार दूसरों को बताने की इच्छा हो, और

2 अपना अनुभव या दृष्टिकोण क्रमबद्ध पेश करने की सामर्थ्य हो।

रूप से पड़े, पर पड़ता अवश्य है। जो अध्याप्क इस अभाव को दूर कर सकने वाली गतिविधियां आयोजित करने की जहमत नहीं उठाता, उसे लिखने का कौशल सिखाने में गम्भीर दिक्कतों का सामना करना पड़ सकता है। चित्रकारी इन दिक्कतों को दूर करने का एक उम्दा साधन है।

लिखने की शुरुआत

यह निर्णय हर अध्यापक को स्वयं लेना होगा कि वह किस उम्र या अवसर से लिखना सिखाने की शुरुआत करे। निर्णय का आधार बच्चों की प्रगति की समीक्षा ही हो सकती है। यह भी देख लीजिए कि बच्चों ने चित्रकारी के जरिए हाथों और उंगलियों के संचालन में पर्याप्त लचीलापन और नियंत्रण हासिल कर लिया है या नहीं। जो बच्चे किताबों या पढ़ने की अन्य किसी सामग्री के सम्पर्क में रहे हैं, सम्भव है, वे खुद ही लिखने के अवसरों की मांग करें। इससे अध्यापक का काम आसान हो जाएगा। जब बच्चे स्वयं कोई मांग करते हैं तो यह इस बात का पक्का संकेत है कि वे उस काम को करना चाहते हैं। हो सकता है कि वह काम बहुत कठिन सिद्ध हो और इसलिए वे अपनी मांग कुछ समय बाद वापस ले लें, पर वह फिर कुछ दिन बाद अवश्य उठेगी। बच्चे कई कौशलों पर ठीक इसी तरह अधिकार प्राप्त करते हैं। और लिखना कोई अलग चीज़ नहीं है।

जब आप लिखने का शिक्षण शुरू करने का निर्णय लें तो सबसे पहले बच्चों से पूछें कि वे आपसे क्या लिखवाना चाहेंगे? यदि आप 'लिखना' क्रिया का इस्तेमाल अपनी बातचीत में करते रहे हैं तो उन्हें आपकी बात समझने में कोई दिक्कत नहीं होगी। पर यदि उन्हें यह नहीं मालूम है कि आप क्या चाहते हैं तो आपको कुछ अलग ढंग अपनाना पड़ेगा। आप उनसे कुछ चीजों के नाम बताने को कहें– जैसे उनकी पसंद के जानवर, या उनकी पसंद की खाने की चीजें, चलने वाली चीजें, ऐसी चीजें जिनसे उन्हें डर लगता है,* आदि। बच्चों को बताइए कि आप हर बच्चे की कापी में या फर्श पर एक शब्द लिखेंगे, अतः हर बच्चा आपको कोई भिन्न शब्द बताए। बच्चों से कहिए कि वे इस शब्द को उसके ठीक नीचे उतारें या उसी पर ट्रेस करें।

लिखना सीखने के लिए फर्श एक बढ़िया साधन है। आप उस पर बड़े-बड़े अक्षरों में लिख सकते हैं। फर्श पर लिखना सस्ता भी है क्योंकि आपको सिर्फ चाक या कोयला या कोई स्थानीय रंग खरीदना होगा। परेशानी सिर्फ यह है कि फर्श को बाद में धोना पड़ेगा। इस काम में यदि आप बच्चों को भागीदार बना सकें तो लिखना सीखने के लिए उनकी प्रेरणा दूनी हो जाएगी। कुछ माता-पिता फर्श की धुलाई में बच्चों की साझेदारी से नाराज़ हो सकते हैं। यह अध्यापक को ही सोचना है कि वो उनकी नाराजगी से कैसे पेश आए।

लिखना शुरू करने के लिए ये एकमात्र तरीके नहीं हैं। बच्चों के साथ काम करने वाले लोगों ने कई अन्य विधियों के बारे में सुना होगा। सबसे प्रचलित विधि वर्णमाला के अक्षर लिखना सिखाने की है। चाहे हम ब्लैकबोर्ड पर बड़े आकार में वर्णमाला लिखें या गत्ते के अक्षर काटें या बच्चों से प्राइमर की नकल करने को कहें, एक बात हमें अवश्य याद रखनी चाहिए– यह कि **वर्णमाला में कोई अर्थ नहीं होता।** इसलिए वर्णमाला पर अत्यधिक जोर देना लेखन को सार्थक संवाद का माध्यम समझने से बच्चों को निरुत्साहित कर सकता है। पर जब एक बार अध्यापक शब्दों और अर्थ के बीच कई मजबूत पुल बना चुका हो तो वर्णमाला का परिचय बहुत उपयोगी हो सकता है।

यांत्रिक ढंग से वर्णमाला सिखाने के कई विकल्प हैं। उदाहरण के लिए, आप शब्दों की एक लम्बी सूची बना कर रख लीजिए और उनमें से उन थोड़े-से शब्दों को बच्चों के सामने रखिए जिनका शुरू का अक्षर एक हो। बच्चों का ध्यान इस बात की ओर खींच कर उनसे कहिए कि वे ऐसे अन्य अक्षर ढूंढें जो दिए गए शब्दों में एक से अधिक बार आए हों। हर बार इस गतिविधि के समय पिछली बार के शब्दों को दुहराइए। धीरे-धीरे सामान्य व्यवहार के शब्दों का भंडार इस तरह बढ़ने पर आप उन्हें विभिन्न विशेषताओं (जैसे लम्बाई, अर्थ आदि) के आधार पर वर्गीकृत कीजिए और एक-एक वर्ग के शब्दों को बड़े कागज पर लिख कर दीवार पर चिपका दीजिए। कागज ऐसी जगह चिपकाइए जहां से वे सबको साफ दिख सकें। यह बात मैं कहने लायक भी न समझता यदि मैं ऐसे कई स्कूलों में न गया होता जहां तस्वीरें या चार्ट बच्चों की पहुंच से बहुत ऊपर टंगे रहते हैं। ऐसी सामग्री जो बच्चों से बहुत ऊंचे पर टांगी गई हो, न केवल व्यर्थ जाती है बल्कि बच्चों का अपमान भी करती है।

शुरुआत के बाद

लिखने के शिक्षण की असली चुनौती तब शुरू होती है जब बच्चे लिखने के बुनियादी कौशल में दक्ष हो चुके हों। चुनौती इन दो बातों का विकास करने की है:

1 श्रोता-बुद्धि
2 अपनी बात पहुंचाने यानी सम्प्रेषण की इच्छा

इन दो उद्देश्यों को पाने के लिए अध्यापक को हर छोटी गतिविधि का आयोजन करते समय दूरगामी परिप्रेक्ष्य सामने रखना होगा। यहां एक बार फिर याद रखना जरूरी है कि श्रोता-बुद्धि और सम्प्रेषण की इच्छा का सम्बन्ध लिखने और बातचीत दोनों से है। इसलिए बातचीत की गतिविधियों का लाभ लेखन को मिलेगा और लेखन की गतिविधियों का लाभ बातचीत को।

श्रोता-बुद्धि के लिए जरूरी है कि लिखते वक्त हमारे मन में कोई निश्चित व्यक्ति हो। सम्प्रेषण की इच्छा के लिए जरूरी है कि लिखने का कोई निश्चित उद्देश्य हमारे सामने हो। बच्चों का लेखन– चाहे वह शब्दों में हो, वाक्यों या छोटी कहानी में हो– प्रायः अध्यापक के लिए होता है। श्रोता-बुद्धि के विस्तार के लिए अध्यापक अलग-अलग गतिविधियों में अलग-अलग 'श्रोता' (या पाठक) सुझा सकता है, जैसे अगली सीट पर बैठा बच्चा, कक्षा का कोई अन्य सदस्य, किसी दूसरी कक्षा के बच्चे, माता-पिता। आधी छुट्टी में स्कूल आने वाला कुत्ता, बस, पड़ोसी गांव या शहर के बच्चे– इस तरह की कल्पनाशील सम्भावनाएं लिखने के अभ्यास में जान डाल सकती हैं। बच्चे जैसे जैसे बड़े होंगे, उनकी श्रोता-बुद्धि का विस्तार होगा और उसमें समाज के विभिन्न काम धंधों में लगे लोग शामिल होते जाएंगे।

अध्यापक को भाषा के उन विशेष विन्यासों को पहचानने की कोशिश करनी चाहिए जिनका प्रयोग बच्चा किसी निश्चित पाठक तक पहुंचने के लिए कर रहा है। इस तरह के प्रयोगों को बढ़ावा देना अध्यापक की एक विशेष जिम्मेदारी है। उदाहरण के लिए यदि हम बच्चों से यह बताने को कहें कि फलां कुत्ता उन्हें क्यों अच्छा लगता है तो उन्हें कोई ऐसी बात कहने के लिए प्रोत्साहित करना जरूरी है जो कुत्ते की समझ में आ सके। कुत्ते से कही जाने वाली बात की विषयवस्तु और शैली किसी दोस्त से कही जा सकने वाली बात से भिन्न होगी। कुत्ते से हम कह सकते हैं, 'प्यारे कुत्ते, यहां बैठो।' दोस्त से हम कहेंगे, 'मुझे तुम्हारे साथ खेलना अच्छा लगता है।' किसी निश्चित श्रोता या पाठक के लिए विषयवस्तु का चुनाव शब्दों, मुहावरों और वाक्य की संरचना पर असर डालता है। पर हमें शब्दों और संरचनाओं को अलग से सिखाने की जरूरत नहीं है। जब बच्चों को तरह-तरह के पाठकों के लिए लिखने का मौका मिलेगा तो वे अपने शब्दों और संरचनाओं की अर्थवत्ता स्वयं समझने लगेंगे।

कहने के लिए बच्चे के पास कुछ है या नहीं, यह बात बच्चे के व्यक्तित्व के कई पहलुओं पर निर्भर है। सबसे महत्वपूर्ण पहलू है अपने दृष्टिकोण में विश्वास। जिस बच्चे से कभी अपनी आंखों देखी चीजों के बारे में बताने को नहीं कहा गया या जिस बच्चे की बात की हमेशा आलोचना या अनदेखी की गई, उसमें अपने 'दृष्टिकोण में विश्वास' के विकास की संम्भावना बहुत कम है। ऐसा बच्चा कुछ कहने के लिए उत्साहित महसूस करे यह भी जरा मुश्किल है। जब ऐसे बच्चे से कुछ कहने या लिखने के लिए कहा जाता है तो प्रायः उसका उत्तर होगा कि 'मुझे कुछ नहीं कहना है।' बच्चा ठीक ये शब्द भले न कहे, पर वह इस बात को व्यक्त कर देगा कि उसके पास कहने को कुछ नहीं है। यदि आप ऐसे बच्चों के साथ काम कर रहे हों तो आपके सामने दोगुनी चनौती है क्योंकि आपको सबसे पहले उनके आत्मविश्वास की – दुनिया के प्रति अपने नजरिए की वैधता की – पुनर्रचना करनी होगी।

अध्यापक की प्रतिक्रिया

एक बार बच्चे लिखना सीख लें, इसके बाद उनकी प्रगति बहुत कुछ अध्यापक की प्रतिक्रियाओं पर निर्भर होती है। हमारे देश के बहुत-से प्राइमरी स्कूलों में अध्यापक की प्रतिक्रिया के तौर पर बच्चे को सिर्फ अपनी व्याकरण या हिज्जे की गलतियों के सुधार मिलते हैं। बच्चों की कापियां लाल स्याही से किए गए सुधारों से रंगी रहती हैं। दूसरी तरफ जब बच्चा हर चीज ठीक लिख कर लाता है तो अध्यापक केवल सही का चिन्ह बना कर दस्तखत कर देता है। ये दोनों ही प्रतिक्रियाएं अधूरी और हानिप्रद हैं। बच्चे की गलतियां सुधारने या सही का चिन्ह लगाने के अलावा अध्यापक को बच्चे के लेखन की प्रतिक्रिया में कुछ न कुछ स्वयं भी लिखना चाहिए। उसे पढ़ कर क्या आपको किसी बात की याद आई? यदि बच्चे का लिखा अच्छा है तो क्यों? इस विषय पर और कुछ क्या लिखा जा सकता था? क्या किसी ने एकदम भिन्न ढंग से लिखा है? लेखन पर अपनी प्रतिक्रिया देने के ऐसे सैंकड़ों तरीके हो सकते हैं। जिस तरह बच्चे से बात करते समय आप उसकी बात को विस्तार देते हैं, इसी तरह बच्चे का लेखन पढ़कर आपको उसे विस्तार देना है। बच्चे की कापी पर एक-दो वाक्य लिख कर आप उसे इस बात का प्रमाण देंगे कि आप लेखन को एक यांत्रिक क्रिया नहीं, एक तरह का संवाद मानते हैं। आप भले व्याकरण का अभ्यास देख रहे हों (और यह तो आपको अक्सर करना होगा), आप कोई न कोई दिलचस्प और व्यक्तिगत बात संक्षेप में लिख सकते हैं। यह बात बच्चे के लिए आपके हस्ताक्षर से ज्यादा महत्वपूर्ण होगी।

गलतियां सुधारने के लिए उन पर चिन्ह लगाना काफी नहीं है। यदि आप गलतियों को सिर्फ पहचान कर उन पर लाल स्याही से निशान बन देते हैं तो आप बच्चे की कमजोरी के उदाहरणों को ही उजागर करते हैं। ज्यादा आवश्यक यह है कि जहां बच्चे को सफलता मिली है वहां उसे पहचानें और जहां गलती हुई है उसका विकल्प दें। गलती को पहचानने और ठीक करने में आप बच्चे की सक्रिय मदद भी ले सकते हैं। यदि आपको किसी शब्द के हिज्जे ठीक करने हैं तो सही हिज्जे लिख कर उस शब्द को तीन तरह के हिज्जों में लिख दीजिए और बच्चे से कहिए कि सही हिज्जे पहचाने। यदि आप गलतियां पकड़ने में बच्चे को सक्रिय बनाते हैं तो उसमें अपने लेखन को समीक्षा की दृष्टि से देखने की क्षमता विकसित होगी।

एक
जानी-पहचानी चीजें

घर में रोज काम आने वाली चीजों और अन्य जानी-पहचानी चीजों की चर्चा बच्चों से कीजिए। बच्चों से कहिए कि बर्तन, कपड़े, और गाड़ियाँ जैसे समूह-नामों के अन्तर्गत आने वाली अलग-अलग चीजों के नाम बताएं, जैसे बर्तन के अन्तर्गत चम्मच, देगची, पतीली आदि। एक समूह में आने वाली चीजों की सूची बोर्ड पर बनाइए।

बच्चों को दो समूहों में बैठाइए। पहले समूह का हर बच्चा बोर्ड पर लिखी सूची में से कोई एक नाम अपनी कापी पर उतारेगा, जैसे कोई बच्चा लिखेगा– चम्मच, कोई लिखेगा– कड़ाही। दूसरी समूह के बच्चे एक-एक करके कोई एक चीज़, जिसका नाम बोर्ड पर दिया है, पहले समूह से मांगेंगे। जिस भी बच्चे ने उस चीज़ का नाम अपनी कापी में नोट किया है, वह उसे मांगने वाले बच्चे के पास जाकर चीज़ का नाम लिखने में मदद करेगा।

दो
नामों का संग्रह

आप जहां कहीं भी रहते हैं वहां तरह-तरह के नाम आपको दुकानों, बसों या मील के पत्थरों और दीवारों पर मिल जाएंगे। गांवों में दीवारों पर लिखे नारे या पोस्टर और विज्ञापनों में लिखी जानकारी भी काम आ सकती है।

बच्चों से कहिए कि वे घर से स्कूल के रास्ते में दिखने वाले नामों या संदेशों की सूची बनाएं। सारे नामों को ब्लैकबोर्ड पर लिख कर एक-एक कर बच्चों से उनकी व्याख्या (यानी वह कहां लिखा है, उसका अर्थ क्या है) करवाइए।

तीन
शब्दपूर्ति

बच्चों के जोड़े बना दीजिए। एक बच्चा कोई शब्द लिखना शुरू करेगा, और दूसरा बच्चा उसे पूरा करेगा। वे तब तक अपनी बारी लेते जाएंगे जब तक दोनों 10 शब्द सफलतापूर्वक पूरे नहीं लिख लेते।

चार
सिर्फ एक शब्द

पांच-पांच बच्चों के समूह बना दीजिए। हर समूह के पास एक कागज़ या कापी और एक पैंसिल होगी। हर टोली में एक बच्चे को "नेता, यानी शुरू करने वाला नियुक्त कर दीजिए।

नेता अपने मन में कोई वाक्य सोचेगा पर कागज़ पर वह सिर्फ एक शब्द लिख कर कागज़ और पैंसिल अगले बच्चे को थमा देगा। यह बच्चा भी सिर्फ एक शब्द जोड़ेगा। यह शब्द ऐसा होना चाहिए जो पिछले शब्द से शुरू हुए वाक्य को आगे बढ़ाता हो। इस तरह कागज टोली में घूमता रहेगा जब तक वाक्य पूरा न हो जाए।

टोली का कोई भी सदस्य यह दावा कर सकता है कि वाक्य बीमार पड़ गया है, अतः उसे छोड़ दिया जाए। यदि बाकी बच्चे इस दावे से सहमत हों तो कागज नेता को वापस दे दिया जाएगा और वह एक नए वाक्य का पहला शब्द लिखेगा।

पांच
नक्शा बनाना

बच्चों से पूछिए कि वे घर कैसे पहुंचते हैं पहले उन्हें यह बताइए कि आप स्वयं कैसे घर पहुंचते हैं– रास्ते में पड़ने वाली जगहों और चीज़ों का संक्षेप में विवरण दीजिए।

जब सभी बच्चों को अपने घर का रास्ता बताने का मौका मिल चुका हो तब उनसे कहिए कि जो रास्ता उन्होंने अभी बताया है उसे एक नक्शा बना कर दिखाएं। स्वयं अपने घर का रास्ता ब्लैकबोर्ड पर बना कर दिखाइए। बच्चे जब अपने नक्शे बनाने में व्यस्त हों तो उनके पास जाकर नक्शे में दिखाई गई किसी एक चीज़ जैसे पेड़, दुकान, डाक का डिब्बा, का नाम नक्शे में लिख दीजिए। बच्चों से यह नाम नक्शे के नीचे उतारने के लिए कहिए।

अगली बार यह गतिविधि किसी और जगह जाने के रास्ते को लेकर कीजिए, जैसे मेरे दोस्त का घर, सब्जी मंडी, अस्पताल।

हर बार नक्शे में लिखने के लिए शब्दों की संख्या बढ़ाइए।

छः
इर्दगिर्द की जगहें

यह पिछली गतिविधि का विस्तार है लेकिन इसमें बच्चे अपने आसपास की जगहों के नक्शे बनाएंगे, न कि वहां जाने के रास्ते के। उदाहरण:

स्कूल का पिछवाड़ा
कक्षा का कमरा
पास स्थित तालाब या नदी

नक्शे में दिखाई गई किसी एक चीज का नाम उचित जगह पर लिख दीजिए। बच्चे से यही नक्शा फिर बनाने को कहिए और इस बार उसी से कहिए कि वह उस चीज को दिखाने की जगह उसका नाम नक्शे में लिखे।

सात
वहां पहुंचना

बच्चों से कहिए कि अपने बड़ों से आसपास के गांवों और शहरों के नाम पूछ कर आएं। इन नामों की सूची बोर्ड पर बनाइए और बच्चों से कहिए कि ये नाम उतार लें।

अब इन नामों को दिशा के अनुसार रख कर बोर्ड पर एक सरल नक्शा बनाइए। नाम बच्चों में बांट कर बच्चों को नक्शे के अनुसार बैठाइए। दिशा और दूरी को लेकर एक संक्षिप्त संवाद रचिए। उदाहरण:

''मैं झांसी जा रहा हूं।'
'झांसी कहां है?'
उत्तर में।'
'कितनी दूर...'

दूरी और दिशा से सम्बन्धित शब्द लिखना सिखाइए।

आठ

तस्वीर का वर्णन

'बात करना' अध्याय में दी गई आठवीं गतिविधि देखिए और उसे कुछ बड़े बच्चों के बीच आयोजित कीजिए। प्रश्नों के जवाब बताने की जगह लिखने को कहिए।

विज्ञापनों, पत्रिकाओं आदि के साथ-साथ बच्चों द्वारा स्वयं बनाई गई तस्वीरें इस्तेमाल कीजिए। पहले पूछिए कि चित्र में क्या दिखाया गया है, फिर और जटिल प्रश्नों की तरफ जाइए।

नौ

आवाजों की सूची

पहली बार इस गतिविधि को आयोजित करते समय चार-पांच बड़े बच्चों को शामिल कर लीजिए। ये बच्चे 'रिकार्डर' का काम करेंगे।

बच्चों को पांच या छः-छः की टोलियों में बांट दीजिए। हर टोली को अपने सदस्यों द्वारा पहचानी गई सारी आवाजों की सूची बनानी है। हर टोली थोड़ा चल-फिर सकती है और बारी-बारी से कुछ मिनट के लिए दरवाजे पर खड़े होकर या स्कूल के पीछे जाकर वहां होती हुई आवाजें सुन सकती है। जैसे ही कोई सदस्य एक नई आवाज पहचाने, वह रिकार्डर से उसे दर्ज करने को कहे। आवाजें कुछ भी हो सकती हैं, जैसे दरवाजे की चूं, पत्तियों का हिलना आदि।

सारी टोलियों के वापस आने पर हर टोली का रिकार्डर अपनी सूची पढ़ कर सुनाएगा जिस सदस्य ने जो आवाजें सूची में शामिल कराई हों, उन्हें वह सूची में पहचाने और अलग कागज पर उतारे।

दस

कविता बनाना

पांच-पांच की टोलियां बनाइए। हर टोली को एक कविता की चार पंक्तियां दे दीजिए और कहिए कि टोली के सदस्य चार पंक्तियां और जोड़ें। हर टोली सोचने-बहस करने को पन्द्रह-बीस मिनट के लिए कुछ दूर एकान्त में जा सकती है।

अध्याय-5

पाठ्यपुस्तकें, जगह और इम्तहान

यह अन्तिम अध्याय प्राइमरी स्कूल के जीवन के यथार्थ के बारे में है। हम यहां इस प्रश्न की पड़ताल करेंगे:

> 'क्या इस पुस्तक में दिए गए सुझावों पर एक आम प्राइमरी
> स्कूल की सामान्य दिनचर्या और जिम्मेदारियां निभाते हुए
> अमल किया जा सकता है?

निश्चय ही यह प्रश्न इस पुस्तक को पढ़ने वाले बहुत-से अध्यापकों के मन में उठेगा। यह प्रश्न उन लोगों के लिए भी महत्वपूर्ण है जो इस पुस्तक को अध्यापकों के प्रशिक्षण की निर्देशिका के रूप में इस्तेमाल करना चाहते हैं। स्कूल के यथार्थ से अध्यापक से ज्यादा और कोई परिचित नहीं हो सकता। अतः यदि यह किताब अध्यापकों को यह विश्वास नहीं दिला सकी कि यह स्कूल के यथार्थ को मद्देनजर रख कर लिखी गई है तो यह निरर्थक सिद्ध होगी।

प्रवेशिकाएं और पाठ्यपुस्तकें

हमारे देश में हरेक अध्यापक से यह अपेक्षा की जाती है कि वह पाठ्यपुस्तक को निर्धारित शिक्षण सत्र में खत्म कर सकेगा। 'खत्म' करने से आशय हर पाठ को एक-एक करके पढ़ाने, अभ्यास-प्रश्न कराने, हर पाठ पर गृहकार्य देने और अन्ततः इस बात को लेकर आश्वस्त होने से है कि बच्चे हरेक पाठ की विषयवस्तु पर अधिकार पा चुके हैं। इसमें कोई संदेह नहीं है कि ये सारी अपेक्षाएं भाषा की शिक्षा की दृष्टि से हानिकारक हैं। एक अनिवार्य पाठ्यपुस्तक के पाठों की बौद्धिक चटनी बनाना और बच्चों को आग्रहपूर्वक रोज यह चटनी थोड़ी मात्रा में खिलाना एक आनन्ददायक और प्रेरक अनुभव नहीं हो सकता। पर हम अध्यापकों को यही करना पड़ता है।

इस हालत में हमें यह समझना होगा कि स्कूल में बच्चों की जिन्दगी को आनन्ददायक और उपयोगी बनाने के लिए आवश्यक सारी सामग्री दुनिया की किसी एक पाठ्यपुस्तक में नहीं मिल सकती। श्रेष्ठतम पाठ्यपुस्तक भी इस तरह की थोड़ी-सी सामग्री और सलाह ही दे सकती है। बाकी अध्यापक की सूझबूझ और मेहनत पर निर्भर है। यदि हम इस बात को स्वीकार करें तो हम यह सोचना शुरू कर सकते हैं कि इस पुस्तक में दी गई सलाह और एक अनिवार्य पाठ्यपुस्तक की अपेक्षाओं में किस तरह तालमेल बैठाया जा सकता है। हमें इस पुस्तक में उठाई गई यह मुख्य बात दोहरा लेनी चाहिए: 'भाषा की कक्षा में हम क्या पढ़ाते हैं?''

इस प्रश्न का उत्तर इस पुस्तक में यह दिया गया है कि भाषा की शिक्षा में बच्चों के मानसिक विकास से सम्बन्धित अनेक अनुभव शामिल हैं। भाषा की कक्षा हमें बच्चों के साथ एक बड़े लचीले, सर्जनाशील और मजेदार माध्यम में काम करने का मौका देती है। इस माध्यम की विशेषता यह है कि सारे बच्चे

स्कूल आने के पहले ही उससे परिचित हो चुकते हैं। वे उसे विभिन्न स्थितियों में इस्तेमाल करते हैं और उसे अलग-अलग सन्दर्भों के अनुकूल बनाते चलते हैं। भाषा का अध्यापक कोई एकदम नई चीज नहीं पढ़ा सकता, वह सिर्फ एक ऐसे माध्यम पर अपना अधिकार बढ़ाने में मदद दे सकता है जिसे वे पहले से इस्तेमाल कर रहे हैं। अध्यापक ऐसी परिस्थितियां पैदा कर सकता है जिनमें बच्चे नए कौशल (जैसे पढ़ना व लिखना) सीख सकें और इन कौशलों का उपयोग सीखने और प्रतिक्रिया देने की क्षमताओं के विकास के लिए कर सकें।

इस लक्ष्य के लिए पाठ्यपुस्तक या कोई भी अन्य किताब केवल एक साधन-सामग्री की तरह काम दे सकती है। यदि पाठ्यपुस्तक अच्छे स्तर की हुई तो उसका अन्य पुस्तकों से ज्यादा बार प्रयोग किया जा सकता है। यदि उसमें दिए गए अभ्यास हमारी इस किताब में दिए गए उद्देश्यों से मेल खाते हों तो उनका उपयोग कक्षा में बातचीत और लेखन के आधार के रूप में किया जा सकता है। पर अध्यापक के समक्ष यह बात स्पष्ट होनी चाहिए कि उसका मुख्य उद्देश्य बच्चों की भाषा के प्रयोग की क्षमता बढ़ाना है, न कि पाठ्यपुस्तक को पाठ-दर-पाठ 'खत्म करना। यदि पाठ्यपुस्तक ही कक्षा के जीवन पर छा जाए और अध्यापक अन्य स्रोतों व सामग्री का प्रयोग करना बन्द कर दे तो यह एक चिन्ताजनक बात है।

इसी के साथ यह भी कह देना ज़रूरी है कि इस पुस्तक में दी गई गतिविधियों व पद्धति तथा पाठ्यपुस्तक या प्रवेशिका के इस्तेमाल में कोई बुनियादी अंतर्विरोध नहीं है। कोई भी अध्यापक यहां दी गई गतिविधियों को पाठ्यपुस्तक में दिए गए अभ्यासों से जोड़ सकता है। दरअसल ऐसा अध्यापक यह आशा कर सकता है कि जिन बच्चों को विविध प्रकार की सर्जनात्मक गतिविधियों के सन्दर्भ में भाषा सीखने और इस्तेमाल करने के अवसर मिले हों, उन्हें पाठ्यपुस्तक कहीं ज्यादा आसान लगेगी। ऐसे बच्चे पाठ्यपुस्तक की सामग्री पर तेजी से अधिकार प्राप्त कर लेंगे बनिस्बत उन बच्चों के जिनका पूरा भाषायी प्रशिक्षण कक्षा में पाठ्यपुस्तक की मदद से हुआ है।

इस पुस्तक में दी गई कई गतिविधियों के लिए आवश्यक छपी हुई सामग्री, तस्वीरें और बातचीत के विषय सीधे-सीधे पाठ्यपुस्तक से लिए जा सकते हैं। पाठ्यपुस्तक को कुछ अन्य स्रोतों के साथ प्रयोग करना ज्यादा ठीक होगा, वरना गतिविधियों में वह उमंग नहीं रह जाएगी जो किसी नई सामग्री के सम्पर्क में आने पर महसूस होती है। पाठ्यपुस्तक पर आधारित गतिविधियों और अधिक व्यापक सामग्री पर आधारित गतिविधियों के बीच क्या अनुपात रखा जाए, यह निर्णय अध्यापक को करना होगा। यह विश्वास तो उसे रखना ही चाहिए कि पाठ्यपुस्तक की दैनिक चटनी बनाने वाले सघन अध्ययन के बिना भी पाठ्यपुस्तक 'खत्म' की जा सकती है।

जगह का इस्तेमाल

हमारे देश के लगभग सारे प्राइमरी स्कूलों की एक गम्भीर समस्या जगह की है। इस समस्या के दो पहलू हैं। एक पहलू को तो सब जानते हैं, पर दूसरे पर शायद ही कभी विचार किया जाता हो। पहले का सम्बन्ध एक स्कूल या कक्षा में बच्चों की संख्या से है, और दूसरे का सम्बन्ध जगह के इस्तेमाल से है।

इस बात के पर्याप्त प्रमाण मौजूद हैं कि यदि रजिस्टर पर दर्ज़ सारे बच्चे रोज़ स्कूल आने लगें तो स्कूल में हरदम भीड़ की दिक्कत बनी रहे। एक कक्षा में 50 से अधिक बच्चों को संभालते हुए इस पुस्तक में दी गई पद्धति और गतिविधियों के साथ न्याय करना असम्भव है। इसी तरह वे अध्यापक जो अपने स्कूल में अकेले हैं, इस पुस्तक के विचारों को अमल में लाने में काफी कठिनाई महसूस करेंगे। यदि वे सप्ताह में एक या दो दिन थोड़ी-सी गतिविधियां प्रयोग में ला सकें तो यही काफी संतोषप्रद बात होगी।

जगह की समस्या का दूसरा पहलू सारे अध्यापकों पर लागू होता है– उन सौभाग्यशाली अध्यापकों पर भी जो 30 या 40 बच्चों की कक्षा में पढ़ाते हैं और उन पर भी जो बहुत भीड़ वाली कक्षाएं पढ़ाते हैं। चुनौती इस बात की है कि स्कूल में उपलब्ध जगह को किस तरह इस्तेमाल करें कि वह बच्चों के भाषायी विकास के अनुकूल वातावरण पैदा कर सके। शायद ही कोई इससे असहमत हो कि हमारे प्राइमरी स्कूलों में ऐसा वातावरण नहीं है। दीवारें खाली पड़ी रहती हैं और प्रायः बहुत गंदी हालत में रहती हैं। कोई अल्मारी या रैक नहीं होता; होता भी है तो उसका उपयोग किसी निश्चित उद्देश्य के लिए नहीं किया जाता। जाहिर है कि हम ऐसे स्कूलों की बात नहीं कर रहे हैं जहां दीवारें ही नहीं हैं, या हैं तो गिर पड़ने की हालत में। उन स्कूलों में क्या सम्भव है, यह हमारी समझ की परिधि के परे है।

जिन स्कूलों की दीवारें मजबूत और टिकाऊ हैं, उनमें दीवारों का उपयोग इस पुस्तक के अनुरूप कई उद्देश्यों के लिए किया जा सकता है। हमने चित्रों समेत विभिन्न माध्यमों में स्वयं को अभिव्यक्त करने के अवसरों पर बहुत जोर दिया है। बच्चों की बनाई या अध्यापक द्वारा इकट्ठा की गई तस्वीरों का संग्रह बनाने के लिए दीवारें एक बढ़िया साधन हैं। दोनों ही किस्म की तस्वीरें बातचीत और लेखन की गतिविधियों के लिए उपयोगी हैं। तस्वीरों को दीवार पर बहुत ऊंचाई पर नहीं लगाना चाहिए। साथ ही दीवार पर लगी तस्वीरों के रख-रखाव में बच्चों को प्रशिक्षण देना जरूरी है। यदि आप खाली दीवारों वाली एक कक्षा (जिसमें बच्चे दीवारों पर स्याही छिड़कते हों) को तस्वीरों वाली कक्षा में परिवर्तित कर रहे हैं तो आपको एक दिन या एक हफ्ते या एक महीने में सफल हो जाने की उम्मीद नहीं करनी चाहिए। दीवारों को गंदा देखने के आदी बच्चों को अच्छी तस्वीरें देखने की आदत डालने में कुछ समय लगेगा। पर यह होगा अवश्य।

कई स्कूलों में दीवारों का प्रयोग नैतिक उपदेश लिखने या चिपकाने के लिए किया जाता है। इन उपदेशों से न तो कोई नैतिक उद्देश्य सिद्ध होता है न भाषायी, पर इनकी परम्परा जारी है। इस पुस्तक को पढ़ने और इसके सझावों को अमल में लाने वाले अध्यापक जल्दी ही यह महसूस करेंगे कि उपदेश-वाक्यों या नारों में भाषा का बहुत सीमित और रूढ़ प्रयोग दिया रहता है। चूंकि ऐसे वाक्यों में दिए गए आदर्शों का कड़ा पालन कोई अपने जीवन में नहीं करता, इस कारण बच्चे उपदेश-वाक्यों को भाषा के निरर्थक प्रयोग के रूप में देखने लगते हैं। एक ऐसी कक्षा में, जहां चारों ओर उपदेश-वाक्य लिखे हों भाषा और अर्थ का सम्बन्ध जोड़ना क्यों कठिन होगा, यह हम सहज ही समझ सकते हैं। और यह सम्बन्ध जोड़ना ही तो हमारा उद्देश्य है।

उपदेश-वाक्यों की जगह आप कविता-पोस्टर बनाने की सोच सकते हैं। इन पोस्टरों में एक कविता बड़े-बड़े अक्षरों में लिखी रहेगी और साथ में एक तस्वीर होगी। कविता लिखने में बड़े बच्चे आपकी मदद कर सकते हैं और तस्वीरें छोटे बच्चे बना सकते हैं। यह ध्यान जरूर रखें कि आपकी चुनी हुई कविताएं मजेदार और कल्पनाशील हों, न कि उपदेशात्मक और दार्शनिक। बेहतर यह होगा कि दीवार पर लगाने के लिए कविताओं का चुनाव बच्चे करें। यह जरूरी है कि आप कविता-पोस्टर बनाने का क्रम जारी रखें और उन्हें लगातार बदलते रहें।

और इम्तहान

आखिर में, इस पुस्तक का उपयोग करने के इच्छुक अध्यापकों के लिए परीक्षा पद्धति की अपेक्षाओं पर विचार करना जरूरी है। ये अपेक्षाएं बचपन में ही शुरू हो जाती हैं। प्राइवेट स्कूलों (सिर्फ महंगे ही नहीं, साधारण भी) में नर्सरी और पहले दर्जे में प्रवेश भी परीक्षा के नतीजे के आधार पर मिलता है। बाद में, हर वर्ष के अंत में बच्चे को परीक्षा का सामना करना पड़ता है– सिवाय देश के उन भागों के जहां

आरम्भिक कक्षाओं को अपने आप 'पास' माना जाता है। पर देश के अधिकांश भागों में पांचवीं की परीक्षा का काफी महत्व है और उसके बाद तो परीक्षाओं का ऐसा सिलसिला चालू हो जाता है जिससे माता-पिता, अध्यापक और बच्चे सभी चिन्तित रहते हैं। यह चिन्ता हमारी संस्कृति में उतनी ही पैठ गई है जितना दिवाली जैसे त्योहारों की खुशी। ऐसे भारतीय बच्चे की कल्पना करना भी कठिन है जिसे परीक्षा से डर न लगता हो।

यदि यह पुस्तक छोटे बच्चों को भाषा पढ़ाने की व्यावहारिक तथा दार्शनिक निर्देशका की तरह उपयोग में लाई जाए तो इसका कुछ असर परीक्षा के प्रति बच्चों की मनोवृत्ति पर भी पड़ेगा। परीक्षा का डर एक हद तक बच्चों में आत्मविश्वास की कमी का परिणाम है। इम्ताहन में 'भाग्य' का भरोसा बच्चों के स्कूली जीवन में ऐसे अवसरों की कमी का परिणाम है जब वे अध्यापक की मदद के बिना कोई काम अच्छी तरह करने में सफल होते हों। हमारे स्कूलों में ऐसे अवसरों की कमी का कारण यह है कि हम भाषा समेत हर विषय में ज्ञान पर जोर देते हैं, कौशल पर नहीं। बच्चे जो थोड़े-बहुत कौशल सीख लेते हैं, सो संयोगवश ही। यदि यह पुस्तक नर्सरी और प्राइमरी स्कूल की कक्षाओं में सही और नियमित ढंग से इस्तेमाल की जाए तो निश्चित रूप से आपके बच्चों में आत्मविश्वास विकसित करेगी। ऐसा आत्मविश्वास जिसका प्रभाव परीक्षा समेत बच्चों के सारे कार्यजगत पर दिखेगा।

परिशिष्ट-1

बच्चों के लिए कुछ अच्छी किताबें

1 दूध जलेबी (निरंकार देव सेवक, इंडियन प्रेस, इलाहाबाद)
2 ला मेरा चने का दाना (कुदसिया जैदी, आत्माराम एंड संस, दिल्ली)
3 बुढ़िया की रोटी (शंकर, चिल्ड्रंस बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली)
4 बतूता का जूता (सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली)
5 मंहगू की टाई (सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली)
6 लुक्को मौसी (दयाशंकर मिश्र, हेमकुण्ट प्रेस, नई दिल्ली)
7 बालसखा प्राइमर (इंडियन प्रेस इलाहाबाद)
8 धूपछाया (निरंकार देव सेवक, इंडियन प्रेस, इलाहाबाद)
9 बस की सैर (वल्लिकानन, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली)
10 फल (सुधा चौहान, अर्चना प्रकाशन, इलाहाबाद)
11 जानवर (सुधा चौहान, अर्चना प्रकाशन, इलाहाबाद)
12 प्यासी मैना (प्रतिभा नाथ, चिल्ड्रंस बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली)
13 नन्हें मुन्ने शिशुगीत (निरंकार देव सेवक, चिल्ड्रंस बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली)
14 जल का चमत्कार (काउंसिल फार साइंटिफिक एंड इंडस्ट्रियल रिसर्च, नई दिल्ली)
15 गोलू के मामा (रमेश चंद्र शाह, पूर्वोदय प्रकाशन, नई दिल्ली)
16 महागिरि (हेमलता, चिल्ड्रंस बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली)
17 गली मोहल्ले के कुछ खेल (मुल्कराज आनन्द, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली)
18 चिड़ियाघर में (रस्किन बांड, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली)
19 जंगल की कहानियाँ (प्रेमचन्द, हंस प्रकाशन, इलाहाबाद)
20 खेल-तमाशा (रसिकलाल दत्त, इंडियन प्रेस, इलाहाबाद)